डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2003–05

R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

वर्ष 4, अंक 12, इलाहाबाद दिसम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक पत्रिका

मूल्य 3 रुपये

कोढ़ में खाज बन स
बंगलादेशी अवैध घुस

फिल्मों बढ़ती अश्लीलता एवं नग्नता

GOLDEN OPPORTUNITY FOR STUDENTS FROM ENGLISH MEDIUM SCHOOLS

PESTLE WEED COLLEGE OF INFORMATION TECHNOLOGY

Affiliated to Garhwal University

INSITUTE MEETING GLOBAL IT DEMAND

Confidence and Competence our Hallmarks

- Renowned Faculity comprising Foreign Qualified and Senior Defence Personnel
- Unique Learning Techniques incorporating Latest Technologies ensuring optimization of students potential.
- Great placement opportunities in leading coroporate organizations with the IT industry at the helm of Shining Indian.
- Earn Govt. Recognized Degree
- Development of important personnel skills, free package on Communication Skills and Personallity Development
- Special incentives for wards of defence Personnel
- Homely Hostel Facilities separate for Boys & Girls

We congratulate our students on their outstanding performance in achieving 100% success in University's Last Exam.
Results achieved 16% Distnction,
50% First Div.
& 33% Second Div.
Join Now
& Feel the
Difference

COURSES OFFERED

BBA BCA BSc (IT) BSc (Comptr Sc) BSc (Phy, Che, Maths &Stas) Bcom & Cmptr Acctg- First Time in Dehradun

For Direct Admission Contact:

City Office
Children's Academy,83, Tagore Villa, DEHRADUN 248001

Main office
Pestle Weed College of Information Technology
Oak Hill Estate, Mussoorie Diversion Road, DEHRADUN, 248009 email% pwcit2002@yahoo.co.in

वर्ष : 4, अंक : 12 दिसम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुमलता मिश्रा

उप संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

विज्ञापन प्रबंधक/प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

छायाकारः
पतविन्दर सिंह

पत्रव्यवहार एवं सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद मो०: ०५३२-३१५५६४६

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

संपादक, प्रकाशक, मुद्रक जी.के.द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

मूल्य एक प्रति : 3.00रुपये
वार्षिक मूल्य : 35.00 रुपये मात्र
विशिष्ट सदस्य : 100.00रुपये मात्र
पंचवर्षिय सदस्य : 160.00 रुपये मात्र
आजीवन सदस्यः 1100.00 रुपये मात्र
संरक्षकः 5000.00 रुपये मात्र

अपनी बात

सर्वोच्च न्यायालय का दूरगामी व स्वागतयोग्य फैसला

सर्वोच्च न्यायालय का अभी हॉल ही आया ही मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्ट्राचार और आपराधिक मामलों में मुकदमा चलाने के लिए राज्यपाल के विवेकाधिकार को स्वीकृति देने का फैसला बहुत ही महत्वपूर्ण हैं. इस निर्णय ने यह बिलुकल साफ कर दिया है कि राज्यपाल महज रबर स्टम्प नहीं होता हैं. यह महत्वपूर्ण व स्वागत योग्य फैसला मध्य प्रदेश की पूर्ववर्ती दिग्विजय सिंह सरकार के दो मंत्रियों के भ्रष्ट्राचार से संबंधित था. मंत्रियों के खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति मंत्रिपरिषद ने नहीं दी, तब स्वयं राज्यपाल ने दोनों मंत्रियों के खिलाफ मुकदमाा चलाने की अनुमति दी थी. लेकिन उच्च न्यायालय ने संविधान के अुनच्छेद 163 का हवाला देकर देकर यह व्यवस्था दी कि मंत्रिपरिषद की अनुमति के बगैर राज्यपाल किसी मंत्री के खिलाफ कार्रवाई की अनुमति नहीं दे सकता. सर्वोच्च न्यायालय ने इस फैसले को उलट दिया, साथ ही अनुच्छेद 163 की नए सिरे से व्याख्या करते हुए कहा कि मंत्रियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत होने के बावजूद राज्यपाल के विवेकाधिकार को अगर मात्र इसलिए चुनौति दी जाए कि इसमें मंत्रिपरिषद की सहमति नही हैं, तब तो राज्य की कानून–व्यवस्था ही चरमरा जाएगी.

भारत के शीर्ष अदालत के इस फैसले से उल्लेखनीय और दूरगामी प्रभाव पैदा करने वाला है. इससे मंत्रियों के भ्रष्ट्राचार और आपराधिक गतिविधियों पर रोक लगेगी. (मंत्रियों का भ्रष्ट्राचार में लिप्त पाया जाना अवश्यम्भावी है, और यह भी उतना ही सत्य है कि मंत्रिपरिषद इस मुकदमा चलाने की अनुमति नहीं देगा.) दूसरा महत्वपूर्ण यह है कि जब राज्यपाल का पद उत्तरोत्तर महत्वहीन होता जा रहा है, या जानबूझकर महत्वहीन कर दिया जा रहा है, तब यह फैसला राज्यपाल की क्षमता बताने के साथ–साथ इस पद की गरिमा को भी बहाल करता हैं. यद्यपि संविधान के अनुच्छेद 74 में राष्ट्रपति को केद्रीय मंत्रिमंडल के सलाह से काम करने की बात उल्लिखित है, ऐसे में उनके प्रसाद से बने रहने वाले राज्यपाल के विवेकाधिकार को अनुमति देने के शीर्ष अदालत की संविधान पीठ का निर्णय कम दिलचस्प नही हैं. लेकिन इससे यह तो तय है कि सवौच्च न्यायालय ने अपने इस फैसले से राज्यपाल पद की साख व गरिमा को बहाल किया हैं.

जी.के.द्विवेदी

प्रधान संपादक

छात्र शक्ति राष्ट्र शक्ति

दीपावली एवं छठ के शुभअवसर पर बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं एवं पूरे नगरवासियों को हार्दिक बधाई

प्रशान्त मिश्रा

अध्यक्ष, छात्रसंघ,
बी.आर.डी.बी.डी.पी.जी. कॉलेज, आश्रम, बरहज
निवासः पुराना बाजार, मिश्रवेली, बरहज, देवरिया

छात्र शक्ति राष्ट्र शक्ति

दीपावली एवं छठ के शुभअवसर पर बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं एवं पूरे नगरवासियों को हार्दिक बधाई

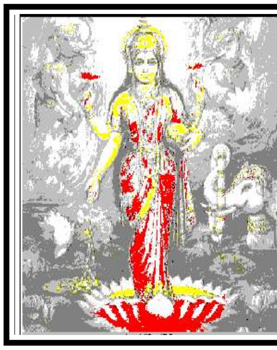

रामनगीना मौर्या

ग्रामः समोगर पोस्टः समोगर थानाः मदनपुर, देवरिया

दीपावली एवं छठ के शुभअवसर पर बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं एवं पूरे नगरवासियों को हार्दिक बधाई

उदय प्रताप सिंह

पूर्व अध्यक्ष, छात्रसंघ,
बी.आर.डी.बी.डी.पी.जी. कॉलेज,
आश्रम, बरहज

छात्र शक्ति राष्ट्र शक्ति

दीपावली एवं छठ के शुभअवसर पर बाबा राघव दास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं एवं पूरे नगरवासियों को हार्दिक बधाई

प्रमोद कुमार सिंह, पूर्व प्रत्याशी, अध्यक्ष पद,
बी.आर.डी.बी.डी.पी.जी. कॉलेज, आश्रम, बरहज, देवरिया

चिन्तित क्यों! चिन्तित क्यों! चिन्तित क्यों!

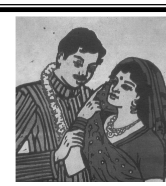

मर्दाना कमजोरी एवं गुप्त रोगों का ईलाज अब बिल्कुल आसान

(ईलाज आधुनिक तरीकों एवं दवाओं द्वारा)

डॉ० दीवान हरबंश सिंह क्लीनिक

3, शिवचरन लाल रोड, (विश्वम्भर सिनेमा के सामने), इलाहाबाद दूरभाषः (0532)–2401076

आपके विचार स्नेह के साथ

पूरी पत्रिका ज्ञानदायकहै
पूज्यवर, प्रणाम
आपने स्नेह भेजकर कृतार्थ कर दिया. पूरी पत्रिका ज्ञान–दायक हैं. आपका श्रम सार्थक हैं. कृपा बनाए रखिए. सादर **डॉ.प्रणव शास्त्री**, कृष्ण बिहार कॉलोनी, पीलीभीत, उ.प्र.

निर्जल होता भारत ने झकझोर दिया
आदरणीय द्विवेदीजी,सादर नमस्कार
आपके द्वारा प्रेषित 'विश्व स्नेह समाज' का सितम्बर 04 का अंक मिला. प्रेषण के लिए आभार. आज की विषम परिस्थितियों में सार्थक पत्रिका का प्रकाशन और वह भी निरन्तर वास्तव में बहुत ही जीवटपूर्ण कार्य हैं. अपनी बात के अन्तर्गत 'निर्जल होता भारत' ने हृदय को झकझोर कर रख दिया. कहानी 'अंधेर में उजाला' एवं आखिरी मुकाम ने चिंतन मनन को विवश कर दिया. आपका यह प्रयास सर्वोत्तम हैं. पत्रिका में रचनाओं का चयन काफी सूझबूझ का परिचायक हैं. पत्रिका उच्चकोटि का संचालन आपकी सम्पादकीय कुशलता का धोतक हैं. विश्व स्नेह समाज पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित. धन्यबाद. **घवेन्द्र सिंह,** विवेकनगर, चान्दपुर, उ.प्र.

पत्रिका से जुड़ना चाहता हुं.
महोदय, हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' से जुड़ना चाहता हुं. नमूना प्रति और नियमावली भेजने की कृपा करें. **राधेश्याम गुप्त**, मुहल्ला–बरई टोला वार्ड,रुद्रपुर, देवरिया, उ.प्र.

पत्रिका के विषय में पढ़ा तो पत्र लिखने बैठ गया.
सम्मानयोग्य, श्रीमान द्विवेदी जी
मासिक 'लोकयज्ञ' पत्रिका में आपकी पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के विषय में पढ़ा तो बस आपको पत्र लिखने लग गया. कृपया एक प्रति भेज देवें आपकी पत्रिका देखने को मन ललचा रहा हैं. **अनिल कोहली** 745/11, शिवपुरी एक्स. गुड़गांव122001

सम्पादकीय सशक्त हैं
प्रिय बन्धु द्विवेदीजी,सप्रेम नमस्कार
सम्मानित पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' वर्ष 4, अंक 9 हस्तगत हुआ. एतदर्थ कृतज्ञ हुॅं. पत्रिका हर वर्ग के पाठकों को पसन्द आएगी. ऐसा मेरा विचार हें. सम्पादकीय सशक्त हैं. आवरण बहुत ही सुन्दर है. पत्रिका दीर्घजीवी हो प्रभु से कामना हैं**वृन्दावन त्रिपाठी'रत्नेश'** परियावॉ, प्रतापगढ़, उ.प्र. 229419

पत्रिका काफी अच्छी लगी
प्रिय महोदय, सादर प्रणाम
कृपया हमें हिन्दी किताबें, पत्रिकाएं और स्मारिका भेजते रहें. वाचनालय और ग्रंथालय भी हैं. पुराने अंको को भी भेजिए. यहां कई प्रकार के कर्मचारीगण आकर पढ़ते हैं. लगातार पत्रिका भेजते रहें. **सचिव**, स्वागथम, एच.टी.सी, 14–8, राजेश्वरी नगर, मायिल्यादुथरी, तामिलनाडु–609001

आपको रचनात्मक सहयोग का इच्छुक हुं.
संपादक महोदय, सादर नमस्कार
आपके कुशल सपांदकत्व में मासिक 'विश्व स्नेह समाज' का प्रकाशन होता है जानकर प्रसन्नता हुई. मैं आपको रचनात्मक सहयोग का इच्छुक हूं. कृपया पत्रिका की एक प्रति अवलोकनार्थ भिजवायें. तत्पश्चात रचनायें आदि भेजुंगा. आशा है पत्रोतर यथाशीघ्र देंगें. आपका प्रयास सराहनीय हैं. **एम. मुमताज हसन,** द्वारा डॉ. मानो बाबू, रिकाबगंज, टिकारी, गया, बिहार,

श्री संपादक जी, नमस्कार
आपकी पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के बारें में जानकारी भेजिएगा. **हंसमुख रामदेपुत्रा,** महियारी, बाया बारवां, जिला–पोरबंदर, गुजरात

आदरणीय महोदय, सादर नमन
आशा है आप स्वस्थ एवं कुशल हैं. हम एक अहिंदीभाषी लेखक एवं पत्रकार हैं. हम आपकी पत्रिका से रुबरु होना चाहते हैं. यदि संभव हो तो एक प्रति भेजवाकर सहयोग करें. हम आपके आभारी रहेंगें. इति.**बैद्यनाथ उपाध्याय,** गग्रम–पाकृबाड़ी, खोवरा, उदालगुड़ी, 784509, असम

प्रिय संपादक, समय–समय पर आपकी पत्रिका प्राप्त होती रहती है. आपकी पत्रिका मुझे कहॉनियों की दृष्टि से उत्तम प्रतीत होती हैं. सुझाव हैं कि कुछ स्तरीय कवितायें भी पढ़ने को मिलेगी. मेरा नया पता नोअ कर लें. **शैलेश बिडालिया,** जे/159, सरोजनी नगर, नई दिल्ली–110023

प्रिय महोदय नमस्कार,
निवेदन है कि 'विश्व स्नेह समाज का वार्षिक तथा आजीवन सदस्यता शुल्क क्या है? नमूना प्रति सहित जानकारी कराने की कृपा करें. आपके द्वारा जो सम्मान दिये जाते हैं कृपया नियम सदस्यता सहित जानकारी कराने की कष्ट करें. आशा है स्वस्थ सानन्द व कुशल होंगें. सादर शुभकामनाओं सहित. **दिलीप कुमार चतुर्वेदी,** ग्राम–व पो0–निमचेनी, मितौली, जनपद खीरी, उ.प्र.

भिन्न रुचिर्हि लोकः
आदरणीय द्विवेदीजी, सादर नमन
आपके द्वारा प्रेषित मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' प्राप्त हुई. एतदर्थ मैं आपका अनुगृहीत हूॅ. पूरी पत्रिका बड़े मनोयोग से पढ़ गया. 'भिन्न रुचिर्हि लोकः' के अनुसार आपने सामग्री के चयन में वैविध्य का निर्वाह किया हैं. सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक

सामग्री के अतिरिक्त आपने चिकित्सा, फिल्मी जगत, लतीफे आदि देकर पत्रिका को अधिकाधिक पाठक वर्ग के लिए उपयोगी बना दिया हैं. कविताएं, गीत–ग़ज़ल भी संतोषप्रद हैं. श्री बुद्धिसेन शर्मा तो देश के प्रतिष्ठित कवि और ग़ज़लकार हैं. उनकी छोटी बह ग़ज़ल विशेष अच्छी लगी. डॉ. कुसुमलता मिश्रा का संपादकीय सार्थक एवं विवेक पुरस्कर हैं. विचारशील व प्रबुद्ध पाठकों के प्रति उनकी आस्था निस्संदेह सराहनीय हैं. इसी संदर्भ में आपसे हार्दिक अनुरोध है कि पत्रिका का प्रुफ–संशोधन सतर्कतापूर्वक करें. आलेखों और विशेषतः कविताओं में मुद्रण दोष के कारण कई बार अर्थ का अनर्थ हो जाता हैं जो प्रबुद्ध पाठकों के लिए बड़ा असहय हो जाता हैं. मुद्रण की दृष्टि`स अणिशुद्ध पत्रिकाएँ लघु होते हुए भी लोकप्रिय एवं दीर्घजीवी होती हैं. शुभमस्तु.

प्रो0 भगवानदास जैन ,पूर्व अध्यापक, बी–105, मंगलतीर्थ पार्क, जशोदागनर केनाल के पास, मणीनगर ई, अहमदाबाद

✍श्री सम्पादक महोदय,

कृपया विश्व स्नेह समाज की एक प्रति नमुनार्थ निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें. **नंदकिशोर शर्मा,** वैद्यरत्न, पो. आगर, मालवा, उज्जैन, म.प्र.

✍ माननीय सम्पादक जी,

सादर अभिनन्दन

सुपर इंडिया अक्टूबर04 में आपका सम्मानार्थ प्रविष्टि आमंत्रित पढ़ा. कृपया इसके विषय में विशेष नियम तथा अंतिम तिथि बताने की कृपा करें. साथ ही इलाहाबाद का पिन कोड भी अंकित करें. **मुरलीधर बौड़ाई,** भागीरथ भवन, 72, रवीन्द्र गार्डन, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ, उ.प्र.

✍मोहतरमा बहन श्रीमती जया शुक्ला साहिबा, अदाब अर्ज़ हैं.

आपका पोस्ट किया हुआ अंक 7 मिला. शुक्रिया इसमें कहानियों के साथ काव्य धाराएं भी अच्छी हैं. डॉ0 राजकुमारी शर्मा राज साहिबा पे लेख जानकारी से भरा हैं. सम्पादकीय टीम को मुबारकबादा पेश हैं. **आरिफ़ जमाली**, सचिव हिन्दी उर्दू साहित्य परिषद, शेख बुन्कर कॉलोनी, पो. कामटी, जिला–नागपुर, महाराष्ट्र

✍आदरणीय संपादक जी,सादर नमस्कार

आपके द्वारा प्रेषित 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका प्राप्त हुई. अच्छी लगी. इसमें सुप्रभात के प्रकाशना के सबंधी पढ़ा. मैं इसमें सहयोगी आधार पर भाग लेना चाहता हूँ. कृपया बतायें कि सहयोगी राशि कितनी रहेगी व काव्य संकलन कब तक प्रकाशित होगा. ध न्यबाद सहित. **डॉ. दिवाकर 'दिनेश गौड़'** ,डी–14, आनन्द नगर सोसायटी, सायन्स कॉलेज के पीछे, गोधरा, गुजरात.

✍आदरणीय श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदीजी, सादर नमस्कार

साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकारों की उत्कृष्ट पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का अंक सितम्बर 2004 मिला. अंक ताजगी भरा है तथा संग्रहणीय सामग्री से लवरेज हैं तथापि कहानी 'अंधेरे में उजाला' अत्यंत भावपूर्ण एवं समीचीन हैं. सम्पादकीय –अपनी बात में निर्जल होता भारत के माध्यम से पानी की उपलब्धता तथा उसे दुरुपयोग को रेखांकित कर आपने गंभीर समस्या को उठाया हैं. बधाई.

आशा है कि आपका स्नेह आर्शीवाद एवं सहयोग अवश्य मिलेगा. इलाहाबाद से मेरा पुराना अपनापन नाता हैं. सन् 1995 में सर जी.एन. झा तथा सर ए. एन.झा हॉस्टल में रहकर मैंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की थी. ससम्मान धन्यबाद विनीत **डॉ. सुनील कुमार** अग्रवाल, स्वप्निल सदन, रानी बाग, सुभाष रोड, चंदौसी, मुरादाबाद, उ.प्र.

✍संपादक जी, नमस्कार

अपनी दो लघुकथाएं प्रेषित कर रहा हूँ. दंगो की पृष्ठभूमि लिए हुए. ये कथाएं साम्प्रदायिक न होकर मानव प्रवृत्तियों को उजागर करती है. साथ ही पानी पर एक रचना/बधाई कार्ड के रुप में संलग्न हैं. आशा है रचनाएं पसंद आएगी. धन्यबाद **घनश्याम अग्रवाल,**हिन्दी राजस्थानी हास्य–व्यंग्य कवि, अलसी प्लॉटस, अकोला

✍आदरणीय संपादक जी,सादर वन्दे

आपका मासिक पत्र विश्व स्नेह समाज सस्नेह प्राप्त कर प्रसन्नता हुई. पत्रिका स्वरुप और विषय वस्तु अच्छी हैं. सहयोगार्थ एक कविता रोटियां प्रकाशनार्थ भेज रहा हूं. शायद उपयुक्त लगे और स्थान पाये. साथ में अपेक्षित लिफाफा भी पता लिखा हुआ भेज रहा हुँ. आगे भी पसन्द आये तो साहित्यिक सहयोग देता रहूंगा. पत्रिका की समुन्नति की कामना के साथ.

राधेश्याम श्रीवास्तव, रिटायर्ड, सिनियर सुपरिडेन्ट, 49/20, राजीव वार्ड, एकता कॉलोनी, बीना, सागर, मप्र

✍माननीय द्विवेदी जी, सादर अभिवादन

'विश्व स्नेह समाज' मासिक का सितम्बर 4 का अंक प्राप्त हुआत्र इतनी अच्छी पत्रिका निकालने के लिए बधाई स्वीकार करें. निश्चय ही आपका श्रम सार्थक हैं. हिन्दी के माध्यम से विज्ञान, विज्ञान परिषद आलेख जानकारी परक व महत्वपूर्ण है तथा प्रशंसनीय हैं. यदि संभव हो तो दो पृष्ठों में बाल साहित्य पर सामग्री प्रकाशित करें. लघुकथाएं भी दें. पत्रिका की उत्तारोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं. शेष शुभ. आशा है सानन्द हैं.**श्याम सुन्दर गर्ग 'सुमन'** सम्पादक, सामयिकी, बी 320, सुभागनगर, भीलवाड़ा, राजस्थान

✍संपादक महोदय, चरण स्पर्श

कृपया मेरा अनुरोध पर विचार अवश्य करें. मेरा सुझाव यह है कि पत्रिका में हरदम 1 पृष्ठ खेल का, 1 पृष्ठ फिल्मी दुनिया का डालें तथा पृष्ठ संख्या पत्रिका में बढ़ाने की कृपा करें. मुझे विश्वास है कि आप इस पर अवश्य विचार करेंगें.

डॉ. विवेक रंजन नियोगी आजाद नगर दक्षिणी, बरहज बाजार, देवरिया,

कोढ़ में खाज बन सकते हैं बंगलादेशी अवैध घुसपैठिये

✍राजेन्द्र चड्ढा

अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्रिका टाइम ने अपने एक अंक में बांग्लादेश को दुनिया में इस्लामी आतंकवाद का नवीनतम ठिकाना बनाया तो पश्चिमी देशों के लिए भले ही यह नई बात थी पर भारत के लिए नहीं. टाइम के अनुसार, उसकी दक्षिणी तटीय पहाड़ियॉ और भारत के साथ लगी उत्तरी सीमाएं पूरी तरह अराजक होने के साथ कंबोडिया और दक्षिण थाईलैंड से वाया श्रीलंका, कश्मीर, मध्य एशिया और मध्य पूर्व तक अवैध हथियारों के शस्त्र विक्रेताओं द्वारा लेस मुस्लिम आतंकवादियों से पटी हुई हैं. आज दक्षिणी बांग्लादेश, सैकड़ों जिहादियों के लिए एक जन्नत बन चुका हैं.

देश के पूर्वोत्तम भाग की प्रमुख समस्याओं में बड़े पैमाने पर बांग्लादेशियों की अवैध ा घुसपैठ क्षेत्र में पृथवतावादी और विद्रोही आंदोलन विशेष रुप से असम में इस्लामी आंतकवाद का उदय तथा स्वर्ण त्रिकोण वाले देशों से नशीले पदार्थो की तस्वीर हैं. पूर्वोत्तर में बड़े पैमाने पर बांग्लादेशियों की अवैध घुसपैठ से एक बहुआयामी समस्या खड़ी हो गई हैं. देश के पूर्व उपप्रधानमंत्री और पूर्व गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने फरवरी २००३ में कहा था कि वर्तमान में भारत में करीब दो करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं जिनमें से आधे पश्चिम बंगाल में बसे हुए हैं. श्री आडवाणी ने कहा कि पश्चिम बंगाल में यह समस्या विशेष रुप से गंभीर है हालांकि भारत के दूसरे राज्य की अनिच्छा के बावजूद अवैध घूसपैठिए रह रहे हैं. ऐसा नहीं है कि किसी और ने इस गंभीर समस्या की ओर ध्यान न दिलाया हो. सन् १९९८ में असम के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत) एस. के.सिंहा ने तत्कालीन राष्ट्रपति के. आर.नारायणन का बांग्लादेशी घुसपैठ पर भेजी ४२ पृष्ठ की विस्तृत रिर्पोट में बांग्लादेश के असम और पूर्वोत्तर राज्यों में अपने अधिक से अधिक नागरिकों को भेजकर एक दिन इस क्षेत्र में बांग्लादेश में मिलाने और उपमहाद्वीप में एक बड़ा इस्लामी देश बनाने की षड्यंत्रकारी योजना के बारें में कुछ महत्वपूर्ण सवाल उठाए थे. राष्ट्रपति को भेजी अपनी रिर्पोट में श्री सिन्हा ने यह भी कहा था कि वह दिन ज्यादा दूर नहीं है जब बांग्लादेश की सीमा वाले असम के कुछ जिलों में बांग्लादेशियों को बहुमत हो जाएगा और अंततः वे इन जिलों के बांग्लादेश में विलय की मांग करेंगें.

लगभग चार साल बाद टाइम पत्रिका ने इसी बात की पुष्टि की. पत्रिका के शब्दों में उसका (बांग्लादेश इस्लामिक मंच) सपना बंग्लादेश की सीमाओं से बढ़कर एक विशाल इस्लामी देश बनाना है, जिसमें असम और उत्तरी बंगाल के मुस्लिम आतंकवादियों को बाग्लादेश में उनकी गतिविधियों को जारी रखने की स्वीकृति दी गई तो यह सपना शेष क्षेत्र के लिए एक दुस्वप्न साबित हो सकता हैं.

सन् १९९८ में सिन्हा रिर्पोट से असम मे से असम में खासी सनसनी पैदा हो गई थी, जहॉ असम गण परिषद, भारतीय जनता पार्टी और ऑल असम स्टूडेंट यूनियन ने राज्यपाल के इस कदम का स्वागत किया था, वहीं कांग्रेस ने एक होव्वा खड़ा करने के लिए उनकी कड़ी आलोचना की थी. दरअसल, प्रेस की आवश्यकता और आम नागरिकों इस विषय को समझाने की दृष्टि से सार्वजनिक की गई सिंहा रिर्पोट आज घुसपैठ के समूचे मामले को समझने के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं. यहां तक कि आसू या अगप ने भी घुसपैठ के विषय को समझाने की दृष्टि से सार्वजनिक की गई सिंहा रिर्पोट आज घुसपैठ के समूचे मामले को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं. यहां तक कि आसू या अगप ने भी घुसपैठ के विषय पर ऐसा विस्तृत और विशद् दस्तावेज नहीं तैयार किया जबकि इस मामले को लेकर असम में छह साल तक जन-आंदोलन चला.

सात अक्टूबर २००२ को शिलांग में एक संगोष्ठी में उपस्थित मेघालय के राज्यपाल श्री एम.एम.जेकब ने भी सिंहा के बंग्लादेश से हो रही मानवीय घुसपैठ को प्रभावी रुप से रोकने के लिए भारग-बांग्लादेश सीमा पर पुलिस चौकियों को मजबूत किए जाने की बात को पहले भी उठाने का जिक्र करते हुए कहा, मैंने बांग्लादेश सीमा से सटे गारों हिल्स इलाके का दौरा करने के बाद पाया कि सीमांत पुलिस थानों में सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नही हैं. यहां तक कि उनके पास अपने हथियारों को सुरक्षित रखने के लिए ढंग का मालखाना तक नहीं हैं. मजेदार बात यह थी कि जब भी राज्यपाल बांग्लादेशी घुसपैठ पर बयान देते तो कांग्रेस नेता तत्काल उनका विरोध करते हुए उनकी आलोचना करने लगते. इसी क्रम में जब श्री सिंहा ने शिलांग में अपना भाषण दिया तो बुजुर्ग कांग्रेसी नेता और असम के मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्हें एक राज्यपाल होने के नाते से इस मुद्दे पर इस तरह का सार्वजनिक बयान न देने की अपील की.

श्री सिंहा ने आईएमडीटी कानून को समाप्त करने के बयान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री गोगोई ने कहा कि

एक प्रदेश के राज्यपाल से राज्य सरकार की नीतियों का विरोध अपेक्षित नहीं हैं. कांग्रेस पार्टी और तरूण गोगोइ सरीखे राजनैतिक अपने आंख-कान बंद रखना चाहते हैं. इसका कारण साफ हैं. असम में बड़ी संख्या में बांग्लादेशियों ने अपने नाम मतदाता सूची में दर्ज करवा लिए है और वे सभी कांग्रेसी वोटबैंक का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं.

बांग्लादेशी घुसपैठियों का एक बड़ा हिस्सा असम ५० लाख, त्रिपुरा १० लाख, में केंद्रित हैं. नागालैंड, मणिपुर और अरूणाचल प्रदेश में भी कुछ हजार बांग्लादेशी मौजूद हैं. बांग्लादेश से इतने बड़े पैमाने पर हुई अवैध घुसपैठ का ही नतीजा है है कि असम के २३ में से १० जिले मुस्लिम बाहुल्य बन चुके हैं. पश्चिम बंगाल के नौ सीमांत जिलों में से दो-तीन को छोड़कर, सभी जिले मुस्लिम बाहुल्य हो चुके हैं. पश्चिम बंगाल की ५६ विधानसभा सीटों पर मुसलमान निर्णायक स्थिति में हैं.

कोलकाता से प्रकाशित होने वाल अंग्रेजी अखबार स्टेट्समैन ने कंट्री कजिन्स शीर्षक से प्रकाशित अपने संपादकीय में इस बात का खुलासा किया कि किस तरह वाममोर्चे ने कांग्रेस की सहायता से उनके वोटबैंक को बढ़ाने के लिए बांग्लादेशियों की अवैध घुसपैठ को बढ़ावा दिया. इस वजह से प्रदेश में किस तरह आईएसआई और कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों के पैर मजबूत हुए हैं और अब कैसे ये संगठन आतंकवादियों और विध्वंसकारियों को बढ़ावा दे रहे हैं. यहां तक कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता दिवंगत श्री इंद्रजीत गुप्त ने, जब वे केन्द्रीय गृहमंत्री थे, पूरी तरह से गैर-जिम्मेदाराना भाव से कहा था कि सीमा के दोनों और बंगाली लोग रहते हैं और हमेशा आते-जाते रहते हैं. वे भारत के असम, त्रिपुरा, बंगाल और बिहार राज्यों में बड़ी संख्या में आए हैं, देश की राजधानी दिल्ली में भी. वहां भी वे समस्याओं से घिरे हैं और भारत के लिए भी समस्यायें उत्पन्न कर रहे हैं.

पूर्वोत्तर की समस्या को लेकर आमतौर पर सरकार का रवैया सुस्ती भरा और यथा स्थितिवाद का रहा है जबकि एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता हैं. ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि पूर्वोत्तर में बाग्लादेशियों की उपस्थिति से न केवल जनसांख्यिकीय संतुलन बिगड़ा है अपितु इसके राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक परिणाम सामने आए हैं.

अगर देश ने इस जनसांख्यिकीय आक्रमण पर समय रहते पर्याप्त ध्यान नहीं दिया तो स्थिति विस्फोटक होकर भारतीय सुरक्षा हितों को खतरे में डाल सकती हैं. इन जनसांख्यिकीय आक्रमण ने न केवल सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सद्भाव को खतरे में डाल दिया है अपितु इसके देश की सुरक्षा पर भी अत्यंत गंभीर परिणाम होंगें.

मेघालय के पश्चिम गारो हिल्स की भारत-बाग्लादेश सीमा पर एक ही नाम से दोनों तरफ बनी दरगाहों के बीच का गलियारा, निश्चित ही रुप से भारत में घुसपैठ का सबसे आसाना रास्ता हैं. सूत्रो के अनुसार, महेन्द्रगंज नामक यह सीमांत क्षेत्र इस्लामी कट्टरपंथियों और आतंकवादियों द्वारा समर्पित कुछ घुसपैठियों के भारत-विरोधी दुष्प्रचार का केन्द्र बन गया हैं. सन् १९८२ के बाद यहां दो बड़े सांप्रदायिक दंगे भी हो चुके हैं.

मेघालय, असम और बांग्लादेश की सीमा पर एक टीले पर हजरत पीर शाह कमाल फकीर दरगाह बनी हैं. सन् १९७१ में हुए युद्ध के बाद, सीमा पर लगी तार ही बाड़ से २०० मीटर की दूरी पर बांग्लादेश में भी इसी तरह की एक दरगाह बनाई गई हैं. बांग्लादेश ने मुस्लिम श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए दोनों दरगाहों के बीच एक छोटी सी सड़क बनाई हैं. वे इस सुविधा का फायदा जियारत की बजाय मेघालय और असम में घुसने के लिए.

तिस पर विडम्बना यह कि बांग्लादेश सरकार इस खुले तथ्य की अनदेखी कर आंखों पर पट्टी बांधे हुए हैं. उसके अनुसार भारत में उनका कोई भी नागरिक अवैध रुप से नहीं रह रहा हैं. जबकि, हकीकत यह है कि कि डीजीएफआई, बांग्लादेश की सैन्य खुफिया सेवा के एजेंट से संपर्क बनाए रखते है और उनका सीमा पार भारत के विरुद्ध लड़ रहे उग्रवादियों को समर्थन, जिसमें उल्फा के नेताओं को ढ़ाका में सुरक्षित आवास देना शामिल है, देने को एक लम्बा इतिहास रहा हैं.

असम के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार मंहत ने ६ अप्रैल २००० को राज्य विधानसभा में एक लिखित बयान में प्रदेश की हिंसा और आतंकावाद फैलाने में आईएसआई की भागीदारी का हैरतअंगेज खुलासा किया था. जबकि दूसरी तरफ तत्कालीन रक्षा मंत्री जार्ज फर्नाडिस संसद में आईएसआई एजेंटों के देश की सशस्त्र सेनाओं में भर्ती होने बात को स्वीकार कर चुके हैं. इतना ही नहीं, पूर्वोतर में सेना की भर्ती प्रक्रिया से जुड़े अधिकारी संदिग्ध विदेशियों के नागरिकता के जाली दस्तावेजों के आध ाार पर सेना में भर्ती होने के कई मामले उजागर कर चुके हैं.

मनुष्य को चाहिए कि वह ऐसे मित्र कहलाने वाले व्यक्ति का साथ छोड़ दे जो मुख के सामने प्रत्यक्ष तो मीठी बातों से दिल बहलायें, मगर पीठ पीछे निन्दा ही न करें, अपितु विपरीत आचरण करें, विश्वासघात करके बने–बनाये काम को बिगाड़ दें. वह ऐसे पात्र के समान है जिसके ऊपर तो मधु–सा दूध लगा हो किन्तु भीतर विष भरा हो:

आचार्य चाणक्य

खत्म हुआ वीरप्पन का खुनी सफर

कूज मुनिस्वामी वीरप्पन का जन्म कर्नाटक और तमिलनाडु की सीमा के करीब बसे एक गांव गोपीनाथम में हुआ. कट्टमबोम्मन १८५७ के संग्राम के नायक वीरपांड्य कट्टबोमन जैसी मूछों वाला दस्यु अपनी बेरहमी की वजह से किंवदती बन गया था.

१९८४ से वीरप्पन ने चंदन की तस्करी और हाथियों की हत्या शुरु कर दी. उसने लगभग २००० हाथियों की हत्या की. १९८७ में उसने पहली बार अपहरण व हत्या का खेल तमिलनाडु के वन अधिकारी चिदंबरम का अपहरण और हत्या करने से प्रारम्भ की. उसके बाद जनवरी १९९० में एक दरोगा और सिपाही की हत्या की, अप्रैल १९९० में एक सिपाही और तीन दरोगा की उसने हत्या की. नवम्बर १९९० में वन उप-संरक्षक, आर.श्रीनिवासन की हत्या की. अप्रैल १९९३ में तमिलनाडु पुलिस के २२ जवानों को बस में विस्फोट में मार डाला.

१९९७ में पहली बार वीरप्पन से संपर्क करने का प्रयास तमिलनाडु सरकार के संदेशवाहक के रुप में तमिल साप्ताहिक पत्रिका नक्कीरन के संपादक, आर.आर.गोपाल के द्वारा १० वनकर्मियों को छुड़ाने के लिए किया. लेकिन वार्ता असफल रही. ३० जुलाई २००० को कन्नड़ फिल्मों के सुप्रसिद्ध फिल्म स्टार राजकुमार सहित चार लोगों का अपहरण किया. एक बंधक नागप्पा भागने में सफल, हुआ १४ नवम्बर २००० को राजकुमार को लगभग चार महीने बंधक बनाने के बाद छोड़ दिया. जिसमें छोड़ने का कारण पैसे का लेन-देन माना जाता हैं. उसने पूर्व मंत्री एच. नागप्पा का भी अपहरण किया और उन्हें १०८ दिन तक अपनी हिरासत में रखने के बाद उनके शव को उनके पैतृक घर के पास फेंकवा दिया.

१८ अक्टूबर २००४ की रात में बंगलूर से १८० किमी दूर धर्मपूरी से १० किमी दक्षिण, तमिलनाडु के पप्परपट्टी में एसटीएफ के साथ एक मुढभेर में अपने साथ एक तीन दशक के लम्बें इतिहास को समेटे हुए ५४ वर्षीय वीरप्पन का अंत हो गया. वह अपने पीछे दो छोटी-छोटी बेटिया और अपनी पत्नी को छोड़ गया.

वीरप्पन ने अपने आपराधिक जीवन में १२० से ज्यादा पुलिसकर्मी और नागरिकों की हत्या की थी. तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल से लगे ६००० वर्ग किमी के जंगल में उसने १५ वर्ष तक विशेष कार्य बल(एसटीएफ) के लगभग १५०० जवानों को खूब छकाया. इस कार्यबल का गठन केवल वीरप्पन की गिरफ्तारी के लिए किया गया था. वह पुलिस के मुखबिर को बेरहमी से काट देता था.

विगत वर्ष तामिलनाडु की मुख्यमंत्री के गुस्से के शिकार हुए वहां पुलिस प्रमुख के. विजयकुमार को दंड स्वरुप को एस.टी.एफ. का प्रमुख बनाया था. उनकी खुफिया जानकारी महत्वपूर्ण साबित हुई. उन्होंने संतमरै कन्नन के नेतृत्व में शीर्ष खुफिया दल बनाया, जिसके

एस.रामचन्द्रन, ब्यूरो तामिलनाडु

सदस्य वीरप्पन के कार्यक्षेत्र वाले गांवो में चुपके से विलीन हो गए, एसटीएफ के कुछ सदस्य वहां कई सप्ताह तक वेश बदलकर रहें. कुछ लोगों ने बस कंडक्टर व कुछ व्यापारी बन गए. मगर कई बार खुफिया तंत्र की रणनीति नाकाम हो गई. एसटीएफ प्रमुख विजयकुमार के मुताबिक मौजूदा अभियान फ्लडिंग स्ट्रेटजी थी. इसके तहत वीरप्पन के कार्यक्षेत्र की निशानदेही करके वहां एसटीएफ के जवानों को बड़ी संख्या में तैनात कर दिया जाता था. इसी के तहत वीरप्पन के तीन साथियों सेतुकोली गोविंदन, चंद्र गोवडर और सेतुमणि को इरोड/धर्मपुरी के घने पहाड़ी क्षेत्रों में भगाने में मदद मिली. धीरे-धीरे उसके गिरोह के सदस्यों की संख्या विभिन्न अभियानों में मारे जाने के कारण घटती गई. वीरप्पन बीमार दमे का शिकार हो चला था

और उसकी एक आंख भी खराब हो गई थी. वह इलाज कराने के फेर में था. इसकी खबर पाकर एसटीएफ के कुछ सदस्य वीरप्पन के गिरोह में भी शामिल हो गए और उसकी मानसिकता से भली-भांति वाकिफ हो गए. इसके बाद उसे गिरफ्तार करने के लिए जाल बिछाना शुरु कर दिया गया. एसटीएफ को यह मालुम हो गया था कि वीरप्पन सलेम/धर्मपुरी इलाके में इलाज कराना चाहता है. वीरप्पन को सलेम के अस्पताल में इलाज के लिए प्रेरित किया गया. उसका ड्राईवर एसटीएफ का सदस्य था. जो बहुत ही खतरनाक कार्य था. वीरप्पन बहुत ही अधिक शंकालु व्यक्ति था और मामूली सी बात पर बेरहमी से मारना उसके लिए आम बात थी. १८ अक्टूबर की रात को करीब १० बजे एक सफेद रंग के टेंपू ट्रेवलर टीएन ४८ए, ६४५३ से धर्मपुरी के नजदीक पिक्ली वन क्षेत्र से वीरप्पन और उसके साथी रवाना हुए. यह टेंपू एसटीएफ ने ही इंतजाम किया था. मकसद था इलाज कराकर किसी और रास्ते से फरार हो जाना.

एसटीएफ प्रमुख विजयकुमार के मुताबिक धर्मपुरी शहर से १० किमी दूर पप्परपटटी गांव में सड़क के किनारे एक सामान्य सा लाल रंग का ट्रक खड़ा कर दिया उसमें एसटीएफ के २० सदस्य सामान्य वेशभूषा में छिपे हुए थे. उस ट्रक के करीब दस मीटर पीछे एक मैटाडोर खड़ी थी जो सलीम बीड़ी ढोती थी. उसमें एके-४७ और स्टेगन से लैस एसटीएफ के दस सदस्य बैठे थे. उस इलाके में खुफिया दल के प्रमुख कन्नन मौजूद थे.

हरे-भरे खतों के बीच सुनसान सड़क हमले के लिए माकूल जगह थी. इस आपरेशन का आपरेशन कुकून रखा गया था. जब एबुलेस उनके पास के गुजरी तो एसटीएफ के लोगों ने वांछित दस्यु को ले जा रहे वाहन को रुकने का इशारा किया और विजय कुमार ने मेगाफोन से उसे आत्मसमर्पण करने को दो बार कहा. लेकिन इसी बीच अपराधियों ने अपनी सेल्फलोडिंग राइफल से हमला कर दिया. एसटीएफ ने एबुलेंस के भीतर हथगोला फेंका और चारों लोगों को भ्रमित कर दिया. एसटीएफ का एबुलेंस ड्राइवर पलक झपकते ही गाड़ी से निकल भागा और २० मिनट तक चले अभियान में शामिल हो गया. आखिरकार गिरोह के सरगना समेत चारों लोग मारे गये. पुलिस खुश थी कि उन्होंने भावी वीरप्पन सेतुकोली गोविंदन को भी खलास कर दिया, जिसे कुख्यात तस्कर का दाहिना हाथ माना जाता था. धर्मपुरी में उसके शव को देखने के लिए लगभग २० हजार लोग जुटे हुए थे. वीरप्पन की पत्नी मुतुलक्ष्मी पति का शव ले लिया लेकिन उसने पुलिस और मीडिया के लोगों को जमकर कोसा.

वीरप्पन के कुछ समर्थक अस्पताल में रोते हुए भी देखे गए. पुलिस ने मुठभेड़ स्थल से चार हथगोले, दो एक-४७ राइफल, एक एसएलआर और एक पंप एक्शन गन बरामद की.

जिस काम को राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड के कमांडो या सीमा सुरक्षा बल के जवान नहीं कर पाए, उसे एसटीएफ ने कर दिखाया. वीरप्पने के ऊपर ५० लाख रु. का इनाम था. उसके हाथी के दांतो का जखीरा करीब ८८००० पाउंड है, यह भारत का शायद सबसे लम्बा अभियान था जिसमें १००० करोड़ रुपये खर्च हुए.

पुलिस के अनुसार वीरप्पन पिछले कुछ महीनों में भ्रमित हो गया था और नए रंगरुटों की तलाश में था.४० वर्षीय सेतुकोली गोविंदन से उसका अहं टकरा रहा था. गोंविदन अपने सरंक्षक की हत्या करके उसकी जगह लेना चाहता था. बाकी सदस्यों को उसका विश्वास प्राप्त नहीं था.

वीरप्पन की मौत के जिम्मेदार उसके रिश्तेदार ही है

पुलिस को उसकी स्थिति के बारे में जानकारी उसके रिश्तेदार ही प्रदान किये थे. वीरप्पन मुठभेड़ वाले दिन अपने साले के घर से खाना खाकर लौटा था. यह चर्चा आजकल सिंगापुरम गांव में आम हैं.

सिंगापुरम गांव में वीरप्पन की ससुराल है. मेटूर और पलार के बीच बसे करुंगलूर गांव के लोगों का कहना है कि पूसारी और राजेद्रन दोनों पुलिस की हिरासत में हैं. उनकी मदद से वीरप्पन को पकड़ना काफी आसान काम था. ग्रामीणो के अुनसार वीरप्पन को राजेद्रन के घर खाने के लिए बुलवाया गया होगा. इसके बारे में उसकी पत्नी मुथुलक्ष्मी को भी जानकारी रही होगी. वीरप्पन ने कुछ ही दिनों पहले अपनी सेहत के बारे में एक कैसेट के माध्यम से जानकारी दी थी. रात के भोजन के बाद उसके रिश्तेदारों ने ही एम्बुलेंस में बैठने के लिए यह कह कर राजी किया होगा कि उसे अस्पताल ले जाया जा रहा है. इसी वैन को धर्मपुरी में उस स्थान पर ले जाया गया, जहां एसटीएफ ने उसे मार दिया. यह सुचना लीक होने के पीछे उसके रिश्तेदारों का हाथ होने के पीछे एक कारण और है कि 1 सितम्बर को वीरप्पन रात के अंधेरे में गोपीनाथम गांव में मंदिर के वार्षिक समारोह में शामिल होने आया था. वहां उसने अपनी मौसी मारक्कल से मुलाकात की और उन्हें अपनी आंख की तकलीफों के बारे में जानकारी दी थी. वीरप्पन ने अपनी मौसी को कुछ रुपये भी दिये. मारक्कल इन दिनों पुलिस की हिरासत में हैं और चर्चा है कि उसने भी पुलिस को कुछ जानकारी दी होगी.

उत्तर प्रदेश में बीएचएमएस की डिग्री की मान्यता रद्द होने का खतरा

ब्यूरों रिर्पोट

उत्तर प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों में दी वाली बीएचएमएस डिग्री की मान्यता रद होनेका खतरा मडरा हैं. केन्द्रीय होम्योपैथिक परिषद के सर्वेक्षण में मिली चेतावनी के बावजूद इन कॉलेजों में पढ़ाई के स्तर में कोई सुधार नहीं है, शिक्षकों की तैनाती मानकों से कहीं ज्यादा कम है और हालत लगातार पतली होती जा रही हैं. इसी वजह से होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से पढ़ने वाले छात्रों को डाक्टरी की आगे की पढ़ाई जारी रखने के परास्नातक पाठ्यक्रम शुरु नहीं हो पा रहे हैं.

यूपी में होम्योपैथी के सात मेडिकल कॉलेज लखनऊ, फैजाबाद, आजमगढ़, गाजीपुर, इलाहाबाद, कानपुर और मुरादाबाद में हैं. निदेशालय के साथ कॉलेजो का खर्च पूरा करने के लिए राज्य सरकार का कुल बजट करीब पैतालिस करोड़ रुपये का हैं. 11 दिसम्बर 1981 में राज्य की होम्योपैथिक कॉलेजों की सरकारी क्षेत्र में शामिल किया गया था.

सीएचसी मानक के अनुसार प्रत्येक मेडिकल कॉलेज में एक प्रिसिंपल के अलावा, 13 प्रोफेसर, 15रीडर, 15 लेक्चरर, एक अधीक्षक, दो चिकित्सा अधिकारी और रेजीडेंट मेडिकल आफीसर का पद होना चाहिए. इसके अलावा हर कॉलेज में एक–एक सर्जन, एनेस्थेलाजिस्ट, स्त्रीरोग विशेषज्ञ, सीनियर फिजीशियन, रेडियोंलाजिस्ट और बायोकेमिस्ट होने चाहिए.

लेकिन स्थिति बिल्कुल खराब है 105 रीडर और 91 प्रोफेसरों के सापेक्ष सिर्फ 12 रीडर और 12 प्रोफेसर तैनात हैं. शिक्षकों के करीब सौ पद खाली पड़े हैं. 2003 के सीएचसी पर्यवेक्षकों की रिर्पोट के अनुसार इन कॉलेजों में पढ़ाई का स्तर बहुत खराब है. फैजाबाद और आजमगढ़ के मेडिकल कॉलेजों में तो भवन मानको के अनुरुप नहीं थे. दो कॉलेजों में बिना स्त्री रोग के ही पढ़ाई व इलाज हो रहा हैं. दो कालेज है ऐसे हैं जहां प्रिसींपल नहीं हैं. कहीं एनेस्थेसिस्ट नहीं तो कहीं फिजीशियन का पद खाली. सीधी चेतावनी मिली थी कि मान्यता रद्द की जा रही हैं. बमुश्किल से इस फैसले पर अमल रुका.

सीएचसी के मुताबिक नोएडा और इलाहाबाद में दो निजी कॉलेज भी परास्नातक की पढ़ाई के हिसाब से मानक पुरा नहीं करते, फिर भी यहां पोस्ट ग्रजुएट पढ़ाई लिए सीएचसी ने मान्यता दे दी क्योंकि ये दोनों कॉलेज परिषद के पदाधिकारियों ने निजी तौर पर खुलवाएं हैं. उत्तर प्रदेश में निजी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज खोलने पर रोक हैं. इस मामले में केवल अल्पसंख्यक संस्थानो को ही छूट दी गई हैं.

साहित्य श्री तथा समाज श्री–२००४ हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित है

हिन्दी मासिक पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"** ने जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से इस वर्ष रचनाकारों व समाज सेवियों को प्रोत्साहित करने हेतु साहित्य श्री व समाज श्री से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसमें 5000/–रुपये का नगद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र तथा 10 रचनाकारों व समाजसेवियें को अन्य सम्मानों से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसके अलावा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने के लिए **ओकारनाथ दूबे स्मृति सम्मान** व पुलिस सेवा में योगदान देने वाले व्यक्ति को **केदार नाथ दूबे स्मृति सम्मान** प्रदान किएं जाएगें. यदि कोई अन्य सम्मानीय व्यक्ति अपने संस्थान या व्यक्ति विशेष के नाम पर पुरस्कार देना चाहते हैं तो कृपया नीचे लिखे पते पर लिखे

इसमें रचनाकारों को फोटो परिचय सहित कोई भी दस रचना मौलिकता के प्रमाण–पत्र के साथ भेजना होगां तथा समाज सेवियों को भी फोटो परिचय सहित समाज सेवा में पॉच वर्षो में किये गये योगदान की विस्तृत रिर्पोट सहित प्रविष्टि **15 जनवरी 2005** तक आमंत्रित हैं. प्रवेशियों को स्टेशनरी, डाकव्यय सहित 100रुपये प्रवेश शुल्क अपेक्षित है. शुल्क मनिआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट 'विश्व स्नेह समाज' के नाम से देय होगा. प्रविष्टि अपनी प्रविष्टिया **हमें निम्न पते पर भेजें:–**

सम्पादक, मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

राजेश कुमार सिंह

पिता– श्री पंचम सिंह
जन्म स्थानः इलाहाबाद,1 जूलाई 1964
सम्पर्क सूत्रः 285–डी, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद–6
शिक्षा : एम.ए. हिन्दी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
संप्रतिः वर्तमान में बायोवेद षोध एवं प्रसार केन्द्र, इलाहाबाद में सन् 2002 से बायो वेद षोध फार्म प्रभारी के पद पर कार्यरत।
प्रकाशनः देश की कई विशिष्ट प्रतियोगी मासिक पत्रिकाओं जैसे–प्रतियोगिता दर्पण, प्रतियोगिता विकास, प्रतियोगिता समाचार, यूथ कम्पटीशन टाइम्स व साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं जैसे–विबग्योर, गंतव्य संघ द्वारा आयोजित निबन्धों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सात्वना पुरस्कार से पुरस्कृत. ऐसे पत्रिकाओं में प्रथम निबन्धों का छायाचित्र के साथ प्रकाशन.
सरस्वती प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय निबन्ध सौरभ, निबन्ध मंजूषा, राष्ट्रीय रक्षा एवं सुरक्षा जैसे आई0ए0एस0, पी0सी0एस0 एवं अन्य उच्चतम परीक्षाओं के तत्कालीन ज्वलन्त समस्या प्रधान निबन्ध संग्रह का प्रकाशन.
अन्य प्रकाशित स्तम्भ–विज्ञान प्रगति के मई 2003, प्रतियोगिता दर्पण के अगस्त 2003 वाले अंक में पाठकों के पत्र.
समाचार पत्र–नार्दन इंण्डिया पत्रिका, दैनिक जागरण, आज, ब्लिट्ज जैसे प्रसिद्ध दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार पत्रों में लेखकीय जीवन से सम्बन्धित उपलब्धियों के विवरण का प्रकाशन.
भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी मंत्रालय के सौजन्य से बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र निदेशक एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्धा कृषि वैज्ञानिक
डॉ0 बृजेश कान्त द्विवेदी के अनुकरणीय सहयोग से सन् 2002 में कृषक खजाना बायोतीमा, आधुनिक जल कृषि एवं आधुनिक सब्जियों की खेती जैसे लघु खण्ड काव्य का प्रकाशन। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ में सन् 2002 में वर्तमान में केन्द्रीय मंत्री साहिब सिंह वर्मा व किसान यूनियन के अध्यक्ष चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत द्वारा इन पुस्तकों का लोकार्पण 2003 में बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र द्वारा जैव प्रोद्योगिकी एवं लाख की खेती जैसे लघु खण्ड के प्रकाशन हो जाने की संभावना.प्रकाशनाधीन पुस्तको में–बायोवेद की अनुपम झांकी, मृदा विज्ञान की अवधारणा, सूत्र कृमियों का महाप्रकोपःकहां और कैसे, प्रो0 सालिग राम भार्गव स्मृति व्याख्यान माला, किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह एवं लघु एंकाकी 'गांव की ओर' है.
'राई से पर्वत की बात'– भारत के 12 वें राष्ट्रपति महामहिम डॉ0 ए.पी. जे.अब्दुल कॅलाम काा जीवन वृतांत–जिसकी पांण्डुलिपि उनकेनाम दिनांक 28 फरवरी 2003 को भेजा गया है.
'कल्पना चावला का स्वर्णिम इतिहास' जिसे उपराष्ट्रपति महामहिम भरों सिंह शेखावत के आहवान पर उनके पास भेजी गयी है. उपराष्ट्रपति महोदय द्वारा पाण्डुलिपि पाने के उपलक्ष्य में रचनाकार को आभार पत्र भी प्राप्त हो चुका है.
पुरस्कारः डिस्टिंग्यूस सर्विस अवार्ड–एन बी.ए.जी. आर. करनाल हरियाणा

कवि हृदय की कोमल कालिका, एक मात्र उसकी अनुभूति।
खुशी–विषाद तड़पन विकास की, होती जो सच्ची अनुभूति।।
जब भी उसको जैसा दिखाई, जीवन में पड़ जाता है।
कलम बद्ध उसको जो करता, समाज का दर्पण हो जाता है।।

झरना

दूर की आवाज में,
वीणा स्वर वज रहा।
एक–एक तार पर,
हाथ नृत्य कर रहा।।1

ऐसा है मालुम होता,
है कोई बुला रहा।
दौड़ कर वहां गया,
इधर–उधर देख रहा।। 2

नदिया के कूल में,
न वीणा, न तार रहा।
शैल के कलेजे पर,
था श्रतोत एक वह रहा।। 3

वृक्ष थे हरे –भरे
मल पानीर आ रहा।
कल–कल की धून में,
'एक चार' मस्त हो रहा।। 4

मछली पालन रोजी-रोटी का सरल साधन हैः एस.पी.भारतीय

इलाहाबाद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य पालक विकास अभिकरण श्री एस.पी.भारती ने बताया कि मत्स्य पालन एक स्व रोजगार का बहुत अच्छा माध्यम हैं. इसके संचालन हेतु सरकार सुविधायें भी प्रदान की जाती हैं. उनके अनुसार शासन द्वारा मत्स्य पालन को बढ़ावा देने हेतु निम्न सुविधाएं दी जाती है–

1. निजी भूमि पर नये तालाब के निर्माण हेतु जिसमें उपयुक्त जाली सहित इनलेट व आउटलेट तथा शैलों टयूबवेल आदि व्यवस्थायें सम्मिलित हैं, रु. 2,00,000/–प्रति हे0 तक बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाता है. इस ऋण पर सामान्य श्रेणी के व्यक्तियों के लिये 20 प्रतिशत अर्थात रु0 40,000/– एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के व्यक्तियों के लिए 25 प्रतिशत अर्थात् रु0 50,000/– की सीमा तक शासकीय अनुदान सुलभ कराया जाता हैं.

2. पुराने तालाब के सुधार के लिये रु. 60,000 की सीमा तक बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाता है जिस पर अनुसूचित जाति/जनजाति के व्यक्तियों के लिए 25 प्रतिशत अर्थात रु. 15,000/–तक तथा अन्य व्यक्तियों के लिए रु0 12,000/– तक शासकीय अनुदान दिया जाता है.

3. मत्स्य पालन प्रारम्भ करने के लिए पहले वर्ष उत्पादन निवेशों के लिये रु. 30,000/–प्रति हे0 तक बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाता है जिस सपर सामान्य श्रेणी के व्यक्तियों के लिए 20 प्रतिशत अर्थात रु0 6000/– व अनुसूचित जाति–जनजाति के लिए 25 प्रतिशत (7500/–) तक अनुदान दिया जाता हैं.

4. मछली पालन करने के लिए मत्स्य पालकों को तकनीक की जानकारी परम आवश्यक हैं. मत्स्य पालक विकास अभिकरण द्वारा पालको को 10 दिन का अल्प अवधि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है. प्रशिक्षण अवधि में रु0 50 प्रति दिन की दर से प्रशिक्षण भत्ता तथा रु 100/–एक मुश्त भ्रमण व्यय दिये जाने की भी व्यवस्था हैं.

तालाब सुधार अथवा निर्माण के बाद मत्स्य पालन प्रारम्भ करने के लिए उर्वरक, मत्स्यग्राम समाज के तालाबों के 10 वर्षीय पट्टे में मछुवा, केवट, कहार, बिन्द, मल्लाह तथा अनुसूचित जाति की प्राथमिकता

2. पटटे पर दिये तालाबों को बन्धाक रखकर बैंको से ऋण प्राप्त करने की सुविधा

3. पंजीकृत मछुवा सहकारी समितियों के सदस्यों को दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत शिकार माही के दौरान मृत्यु हो जाने पर रु 50000/ एवं अपंग हो जाने पर रु25000 दिये जाने का प्राविधान हैं

हमारे सम्मानित नये विशिष्ट सदस्यः

1. **श्रीयुत पं. श्रीधर शास्त्री,**
प्रधानमंत्री,
हिदी साहित्य सम्मलेन, इलाहाबाद

2.**राकेश कुमार ऋषि**
(कोषाध्यक्ष)
पुत्र श्री शुकुल प्रसाद
ग्राम–परासिया तारा
पो. पिपरा रामधर,
थाना–सलेमपुर
जिला–देवरिया
उत्तर प्रदेश

आओ विश्व स्नेह समाज में फैलाये

तन मन का दीप जलाओ
अन्तस तिमिर मिटाओ
आओ करे रोशनी
प्रेम पथ पर
हिंसा की मारी दुनिया को
तनाव भरी, संघर्षमयी
इस जिन्दगी को
प्रेम की ज्योति से भर दें।
साथ साथ चलकर हम
सुख, दुःख, हानि, लाभ, सहकर
जीवन भरण, आशा, निराशा में
स्नेह सहयोग की ज्योति जलायें
भरें स्नेह तन मन में
मंगलमयी भावनाओं का
सारे विश्व को स्नेह दे..स्नेह...दें...
आओ मिलकर हम सब
विश्व स्नेह समाज में फैलायें
ऐसी दिपावली मनायें।

त्रिलोकी नाथ पाल
बजरिया लाला तेली, शाहजहॉपुर, 242001

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें

मि0 कमलेश कुमार
नन्दनी बुक सेन्टर बाई का बाग, इलाहाबाद

जहाँ फुटपाथ ही बिछौना है

✍ इम्तियाज़ अहमद ग़ाजी

फुटपाथ पे सो जाते है अख़बार बिछाकर मजदूर कभी नींद की गोली नहीं लेते मुनव्वर राना यह शेर देश के उन लाखों लोगों के जीवन यापन को देखकर प्रासंगिक हो जाता है जिनके सर के ऊपर छत नसीब नहीं हैं. दिन भर मेहनत मशक्कत करने के बाद जब सूरज ढल जाता है और सोने का वक्त हो जाता है तो फुटपाथ ही मजदूरों का ओढ़ना–बिछौना और घर होता है. इसांनियत किन–किन रुपों में इस ध रती पर जीवन का गुजर–बसर कर रही है यह देखना हो तो अपनी तमाम भागदौड़ के बीच कभी दो पल ठिठिक लीजिए फुटपाथ पर, फ्लाई ओवर के नीचे, सब वे के अंदर, रेलवे लाइन के किनारों, कॉलोनियों के किनारे खाली–खुली जगहों में शहर के कोनों या खुड्डों में और गटर पाइपों या अध बने मकानो के पास.

देश के उत्तर पश्चिम में स्थित सुव्यवस्थित और खूबसूरत शहर चंढीगढ़ में तकरीबन 15 हजार प्रवासी मजदूर इसी तरह का जीवन व्यतीत करते हैं. फुटपाथों पर रहने वाले ये मजदूर रात को अलग–अगल समूहों में स्टोव पर खाना बनाते हैं, लोकगीत गाते हैं, रेडियों–टेप सुनते हैं, फिर गहरी नींद के आगोंश में चले जाते हैं. सुबह पांच–छह बजे के बीच इनका दिन शुरु होता हैं. सेक्टरों में बने सार्वजनिक शौचालयों में निवृत होते हैं, नहाते हैं. स्टोव पर ही नाश्ता और पोटलियों या बोरियों में समेटकर या तो पेड़ो से बांध देते है या फिर फुटपाथ के बरामदों पर बने छज्जों, गैलरियों में डाल देते हैं. पेड़, छज्जे और गैलरियां इनका 'दिनका घर' होते हैं. यानि इनके जीवन में छतनुमा अपना घर नसीब नहीं है.

मुम्बई के फुटपाथ भी अपने तरह के ऐतिहासिक फुटपाथ हो चले हैं. वॉलीवुड की कई मशहूर हस्तियों के लिए यही उनकी शोहरत की उड़ान के रनवे बने. सुनील दत्त विभाजन के बाद जब पाकिस्तान से भारत आए तो मुम्बई में फुटपाथ पर जिन्दगी गुजारनी पड़ी थी. अमिताभा बच्चन को भी कई–कई रात फुटपाथ पर सोना पड़ा था. जैकी श्राफ भी वहीं से निकलकर इतना ऊपर आए. घर होने बावजूद नाना पाटेकर बचपन में फुटपाथ सोने की जिद अपनी मां से करते ताकि वहां की धड़कन महसूस कर सके. दिलीप कुमार का बचपन भी फुटपाथी जैसा ही रहा. नौशाद दादर स्थित ब्राडवे थिएटर के सामने फुटपाथ पर सोते थे. मुम्बई की भिडी बाजार, मस्जिद बंदर, वीटो फोर्ट, माहिम, दादर, बांहा वगैरह रात में 9 बजे के बाद सड़कों के किनारे एक दुनिया बसनी शुरु हो जाती हैं. तिरपाल या प्लास्टिक की छत खड़ी हो जाती है और चूल्हा–चौका जलने लगता हैं. कोई गप्पे लगाता है तो कोई दिनभर का अनुभव सुनाता है, फेरीवाले अपना हिसाब–किताब करते हैं तो कुछ लोग ताश के पत्तो को खोलकर बैठ जाते हैं. बिना बस्ती वालों की बस्ती जादू से बस जाती है.

लगभग इसी तरह का नजारा लखनऊ, भोपाल और पटना सहित अनेक महानगरों में देखा जा सकता है. पटना में लगभग 25 हजार लोग फुटपाथ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं. गांधी मैदान से लेकर म्यूजियम, चिड़ियाखाना के किनारे फुटपाथ से लेकर अगमकुआं शीतला मंदिर, पटना और नालंदा मेडिकल कॉलेज हास्पीटल से सटे फुटपाथ पर अपने–अपने इलाके से दरबदर लोग दुनिया जमाए हुए हैं. इनमें ढेला चलाने वाले, दैनिक मजदूरी करने वाले, सड़क पर कपड़ा बेचने वाले, मजदूरों, रिक्शा चालकों का खाना फुटपाथ पर ही तैयार होता हैं.

इस प्रकार मजलूमों ने अपनी एक अलग ही अर्थव्यवस्था विकसित कर ली है. भोपाल में सरकार द्वारा बनवाये गये शॉपिग कॉम्पलेक्स जो अधूरे पड़े हैं, उन पर भी ऐसी ही लोगों का आशियाना सजा है तो झाबुआ में बनी अर्धनिर्मित कॉलोनियां भी इनके लिए शरणस्थली की तरह हैं. बरसात और जाड़े में इनकी जिन्दगी मर्मातक हो जाती हैं लेकिन साझे की भावना ऐसी है कि कड़ाके की ठंड में फुटपाथ के किनारे आग जलाकर चादर में दो–दो, तीन–तीन लोग सो जाते हैं और पूरी जिन्दगी इसी तरह गुजारते हैं.

123ए/1, हरवारा, धूमनगंज, इलाहाबाद

आप भी क्यों नहीं ग्राहक बन जाएं! घर बैठे 'कथा सागर' के अंक पाएं

वक्त और हालात का त्रैमासिक दस्तावेज

कथासागर

एक प्रति : 15 रुपये मात्र, वार्षिक : 70 रुपये आजीवन : 1000 रुपये

(आजीवन सदस्यों को 200 रुपये मूल्य की पुस्तकें उपहारस्वरुप देय/सचित्र परिचय का पत्रिका में प्रावधान)

कथा सागर पत्रिका, सृजनात्मक लेखन/पत्रकारिता से संबंधित विविध पत्राचार पाठ्यक्रमों की पूरी जानकारी के लिए केवल पांच रुपयें का डाक टिकट भेजें.

संपादक : कथा सागर त्रैमासिक

भारतीय साहित्य सृजन, 6/2, हारुन नगर कॉलोनी, फुलवारी शरीफ, पटना–801

वर्षों किया बलात्कार पति के दोस्त ने

C;wjks fjiksZV

बनारस निवासी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रवक्ता के पद पर कार्यरत, मां इंटर कॉलेज की प्रवक्ता तथा पोस्टग्रजुएट उषा की शादी न्यू कॉलोनी, थाना भेलपुरा जनपद बनारस निवासी विजय कुमार के साथ 10 वर्ष पूर्व हुई थी. शादी के बाद ही वह अपने पति विजय के साथ दिल्ली स्थित पटपड़गंज में रहने लगी. वहीं उसके पति का एक दोस्त सत्यपाल ग्राम अकबरपुर सावली निवासी उसके यहां आता जाता था. वह एक ट्रक चालक था. दोनों में काफी दोस्ती हो गई थी. जानकारी के अनुसार सत्यपाल की पत्नी बीमार रहने लगी और बाद में उसकी मौत हो गई. इस पर वह उसके पुत्र रोमी को अपने साथ बुलंदशहर ले आया ताकि उसके घर का कामकाज हो सके. कुछ दिनों बाद विजय के साथ उसकी पत्नी अपने पुत्र को लेने बुलंदशहर आई. वहां दोस्त ने विजय को पांच हजार रुपये दिये तथा कहा कि वह बनारस में उसकी शादी करा दे. पति को नशे की लत थी. इस कारण उसने पांच हजार रुपये खर्च कर दिए. बाद में सत्यपाल ने उसके पति को बुलाया और कहा कि जबतक वह पांच हजार रुपये वापस नहीं करेगा, तब तक उसकी पत्नी उसके पास ही रहेगी. उसने विजय को धमकाकर भगा दिया. इसके बाद ट्रक ड्राईवर उसे पत्नी के रुप में रखने लगा. वह भी काफी कर्ज में डूब गया. उधर महिला के पति विजय की भी मृत्यु हो गई. 28 अक्टूबर को ड्राईवर ने नशे में होकर उसके ऊपर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगाने की कोशिश की लेकिन महिला ने शोर मचा दिया. आसपास के काफी लोग मौके पर पहुंच गए तथा उसे बचा लिया. बताया जाता है कि इसके बाद वह मुहल्ले में एक पड़ोसी के घर रहने लगी. वह अपने माये बनारस जाना चाहती है, लेकिन उसे जाने नहीं दिया जा रहा है. 8 नवंम्बर को वह किसी तरह एसएसपी के पास पहुंची तथा मामले की फरियाद की. उन्होनें तुरंत सीओ सिटी को अपने कार्यालय में बुलाया तथा मामले की जांच कर पीड़ित महिला के बयान कोर्ट में कराने के निर्देश दिए. पीड़ित महिला ने एसएसपी को जब अपने मैके के बारे में बताया तो एसएसपी ने कहा कि तीन साल तक उसे बंधक बनाकर रक्खा गया. उसने पुलिस को सूचना देने तक की जहमत नहीं उठाई. वह किसी बहाने बाजार आ सकती थी. उसे फोन के माध्यम से सूचित कर सकती थी. खैर पुलिस अपना काम अब कर रही है देखिए उषा को आजादी मिलती है या नहीं.

बरहज में तीन महिला मजदूर प्रकृति की आपदा के शिकार होगई

प्रकृति की आपदा का शिकार गाहे बगाहे गरीब मजदूर ही ज्यादा होते हैं. जितनी भी प्राकृतिक आपदा की घटनाएं होती है उनमें गरीब वर्ग ही शिकार अधिक होता हैं. ऐसा क्यों होता है यह तो नहीं कहा जा सकता. शायद उनके परिवार को और आपदा झेलनी होती है. ऐसा ही एक घटना 26 अक्टूबर को बरहज थाना क्षेत्र के नगरपालिका गौरा में खेत काटकर आ रही 3 महिला मजदूरों के साथ हुआ.

ग्राम गौरा निवासी रामवृक्ष यादव का खेत सरयू नदी के उस पार पड़ता हैं. रोज की भॉति कुछ मजदूर अपने परिवार के साथ खेत काटने गये. देर शाम एकाएक घनघोर बादल देखकर अपने घर की ओर प्रस्थान करने के लिए नाव पर सात मजदूर सवार हुए. नाव के बीच नदी में पहुॅचने पर तूफानी चक्रवात ने नाव को उलट दिया जिसमें से फेंकू, जितेन्द्र, छोटक, चांद देव तो तैर कर निकल गये लेकिन बीच भॅवर में फंसी तारा देवी, फातिमा और जैविन निशा नदी में डूब गयी. देर रात को ग्रामीणों और परिजनों के सहयोग से तारा देवी लाश नदी से निकाल ली गई. परन्तु दुर्भाग्य यह था कि गरीबी की त्रस्त 4

lkSjo dqekj frokjh] C;wjks cjgt

किलों अनाज पर धान की कटिया करने वाली दोनो महिला मजदूरों का शव तक नहीं मिल पाया. महिला मजदूरों को लाश को निकालने का प्रयास भी बगल में स्थित थाना के पुलिस विभाग द्वारा नहीं किया गया और न हीं मल्लाहों ने भी तत्परता दिखाई. विडम्बना यह है कि उक्त नदी में डूबी महिला मजदूर फातिमा के पास सहारे के रुप में तलाक शुदा लड़की शाहजहॉ थी और जैबिन निशा के बूढ़ी लाठी का सहारा विकलांग बहु रेहाना है. उक्त दोनें परिवारों में भूखमरी

का संकट भी आ गया. इस घटना के बाद क्षेत्र का प्रत्येक नागरिक प्रकृति को कोस रहा है और यही कहता रहा जो मुंशी प्रेमचद्र ने अपने कहानी मंत्र में लिखा है 'भगवान बड़ा कारसाज है. बरहज ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राधारमण पाण्डेय ने स्थानीय प्रशासन के साथ–साथ जिला प्रशासन को अवगत कराया है कि शीघ्र ही इन पीड़ित परिवारों को अविलम्ब अहैतुक सहायता प्रदान की जाय जिससे उक्त गरीब परिवार भूखमरी के संकट से बच सके.

दहेज की भेंट चढ़ी एक और अबला

हमारे समाज में फैली एक बीमारी दहेज ने एक और मासूम को अपनी चपेट में ले लिया. मिली जानकारी के अनुसार बरहज नगर के नौका टोला नामक गांव के विचण्डी पाल ने अपनी पुत्री को विवाह रामप्रवेश के पुत्र दुक्खी के साथ 2001 में किया था और उसका गौना 2004 में हुआ. ससुराल जाने पर विचण्डी पाल की पुत्री बिन्दा को हरदम दहेज के लिए मारा–पीटा और अपमानित किया जाने लगा. एक दिन दहेज के लोभियों ने बिन्दा को मार दिया और खबर फैला दी गई कि उसकी मृत्यु बीमारी से हुई हैं. बिन्दा के शव श्मसान घाट पर ले जाते समय उसके पिता ने मौके पर पहुँच कर पुलिस की मदद से श्मसान घाट से लाश बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया. बिन्दा के पिता की तरफ से हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया. आगे की रिर्पोट अभी नहीं मिल पायी हैं. आखिर ये दहेज रुपी राक्षस बिन्दा जैसी कितनी और बिन्दाओं की बलि लेगा.

कब तक चलेगा यह खूनी सिलसिला

आजादी के 57 वर्ष के बाद भी अब भी बिहार स्वतंत्र नहीं हैं. बिहार की राजधानी पटना में केवल 30 दिन में 16 हत्याये हो चुकी हैं. इसके अलावां, लूट, बलात्कार घटनाएं अलग हैं. यह केवल पटना की बात नहीं बल्कि समूचे बिहार में ऐसा हो रहा है. अभी कुछ दिनों पहला पटना उच्चन्यायालय के वकील की हत्या हुई तो कभी किसी मासूम की हत्या होती है. सिवान, छपरा, बेतिया, मोतिहारी जैसे जिलों में रंगदारी, लूट, छेड़छाड़ तो आम बात हो गई हैं. वहां लोग चैन की सांस नहीं ले पाते हैं. लोग किसी के खिलाफ आवाज उठाने से डरते हैं. दहेज के हत्यायें तो सामाजिक विकृति की देन हैं. लेकिन किसी व्यक्ति को ट्रेन से फेंक देना बिहार में अक्सर सुनने को मिलता हैं. अराजकता इस कदर व्याप्त है कि मात्र दो हजार रुपये के लिए अपने ही मित्र की हत्या होने पर पुलिस प्रशासन दर्शक बनकर देखता रहता हैं. घटना घटित होने पर पहुँचने वाली पुलिस केवल कागजी खाना पुर्ती करती हैं. जिस राज्य में ऐसा माहैाल होगा वहां के लोग चैन से कैसे जी सकते हैं. धीरे–धीरे लोग वहां से शरीफ लोग पलायन कर रहे हैं. उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में अपना आशिया बना रहे हैं. लेकिन अब उत्तर प्रदेश भी बिहार के रास्ते पर चल पड़ा हैं. आखिर हमारी सरकार व प्रशासन कब तक अपनी ऑखें बंद करके रखेगा.(बिहार के दौरे पर गये हमारे संवाददाता की रिर्पोट)

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

स्नेंहागन कला केन्द्र

0सिलाई 0कढ़ाई 0पेंटिग 0कम्प्यूटर

0ब्यूटिशियन 0इंग्लिश स्पोकेन

0अन्य प्राफेसनल कोर्सेस एवं व्यवसायिक कोर्सेस

नोटः हमारे यहॉ अनुभवी अध्यापको द्वारा ट्रेनिंग की व्यवस्था है। ट्रेनिग के उपरान्त प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में शाखा खोलने के इच्छुक व्यक्ति/महिलाएं नीचे दिये गये पते पर लिखें या सम्पर्क करें:

प्रधान कार्यालयः एल.आई.जी. 93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

शाखा कार्यालयः एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

2.मि. गिरिराज जी दूबे, ग्राम व पोस्ट : टीकर,पैना, टिकर, देवरिया

3. मि. सौरव कुमार तिवारी, मास्टर कॉलोनी, लकड़ी हट्टा, बरहज देवरिया

4. मि. दिपू दूबे, सी.सी.रोड, देवरिया

फोन न. 0532–3155949, 005561–211173, 05568 212885

(व्यंग्य)

काम वाली बाई

✍रामचरण यादव, बैतुल

किसी के बारें में कुछ कहना आसान तो नहीं फिर भी लोग बिना सोचे समझे किसी को कुछ भी कह देते हैं. बिना सबूत के किसी के खिलाफ कुछ कहना कानूनन एक अपराध है. इसके बावजूद भी मैं एक बात अवश्य कहना चाहूंगा किस प्रकार इस घोर कलियुग में कामचोर लोगों की कमी नहीं इसलिए तो सदैव काम वाली बाई की तलाश में फिरते रहते हैं. आजकल इन बाईयों के भी बड़े नखरे हैं. बात-बात में बिगड़ जाना, एक दिन आना तो दूसरे दिन बहाना, खाना भी बुरा-भला बनाना, बर्तन नहीं माजना. इन तमाम शर्तो के बाद भी काम वाली बाई घर में मौजूद नहीं मिलती. आज यहां का काम छोड़ा तो कल वहां की खबर आ गई. परसों वहां गई तो बरसो बाद आई. कुल मिलाकर बाई से काम कराना बड़ा मुश्किल लगता है किन्तु क्या करें मजबूरी है. बीबी से काम बनता नहीं खुद भी निखट्टू हैं ऐसे में काम वाली बाई के पीछे नहीं घूमेंगें तो क्या करेंगें. वैसे भी काम वाली बाई काम कम बातें ज्यादा करती है. मालकिन से बिल्कुल नहीं डरती, उपर से लड़ती है कि काम में हाथ नहीं बंटाती. सचमुच काम वालीबाई का बोलबाला है. एक मेरा साला है जो साल भर सोते रहता और कहता फिरता है कि काम, क्रोध, लाभ, मोह सब नरक में जाने के मार्ग हैं. नरक में जाने के इच्छुक काम से वास्ता रखें मैं क्यूं जानबूझ कर नरक में जाऊँ. अब उस बेवकूफ को कहां तक समझाऊं कि काम अर्थात् वासना के बारे में लिखा है ना कि दिनचर्या वाले काम के विषय में. आपने रामायण पढ़ी अथवा सुनी होगी उस पर गंभीरता से विचार करें और इस बात पर विशेष ध्यान दें. माना कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में स्पष्ट लिखा हैं-"काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ." समझदार लोग तो समझ गये मगर मेरे साले साहब जैसे कुछ ज्यादा ही समझ गये तभी तो काम में हाथ नहीं लगाते. बेचारी काम वाली बाई को जीते जी

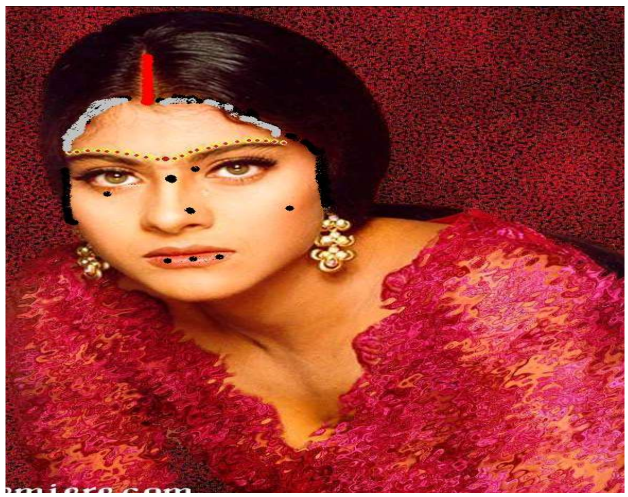

नरक में धकेलने की पूरी कोशिश करते हैं. बाई भी भली-भांति जानती है कि कोई उसके काम काज में बांधा नहीं डाल सकते. अच्छे-अच्छे अधिकारी, नेता, पटेल, पटवारी आदि सभी बलिहारी जाते है और सदैव काम वाली बाई के ही गुण गाते हैं.

कामवाली बाई को बुराई जरा भी पसंद नहीं यदि भूलवश किसी ने तनिक बुराई की तो समझ लो उसकी शामत आई. बिना शर्त के कोई भी बाई काम करने को तैयार नहीं. समय पर तनख्वाह, त्यौहारों, पर सुन्दर सी साड़ी, शादी-विवाह अथवा कोई भी मांगलिक पर्व पर पूरे परिवार के लिए उत्तम उपहार, निःशुल्क भोजन की व्यवस्था अलग से उपलब्ध होनी चाहिए. काम के वक्त बाई का गायब होना अशुभ माना जाता है यही सोचकर दो दिन पहले से ही मुख्य अतिथि के भांति उसे मनाया जाता है. फिर भी समय पर कभी नहीं आती मानों उसने कसम खा रखी हैं कि कभी समय पर नहीं पहुंचना है. आम आदमी की पहुंच से बाहर कामवाली बाई का समय पर पहुचंना प्रशंसा का प्रतीक समझा जाता है. जबकि बाई का प्रशंसा नहीं बल्कि निंदा में ज्यादा विश्वास है तभी तो आए दिन कोई न कोई निन्दनीय कार्य कर बैठती हैं. काम कोई भी हो उसे बिगाड़ना बाई के बांये हाथ का कमाल हैं. घर में सभी सदस्यों के बीच मतभेद पैदा करना, इधर की बातें उधर करना, बर्तन व कपड़े साफ करते-करते हाथ साफ करना आदि शौक तो स्वाभाविक पनपते हैं. बहाने बनाने में इनका कोई शानी नहीं. खानदानी पेशेवर कामवाली बाई अक्सर सभी महानगरों से लेकर हर छोटे-बड़े शहरों में अपना डेरा जमाएं हुए है. इनका इतना बड़ा संगठन है कि अगर ये ठान ले तो सारे काम काज ठप्प हो जाये. घर-घर की कहानी की तरह इनकी मनमानी हर घर में खूब चल रही है. बचपन से बुढ़ापे तक, जवानी से नादानी तक इनकी चर्चा राजधानी में बड़ी शान से होती है. मंत्री की मेहरबानी नेताओं की निगरानी में पलने वाली बाई भला कैसे परेशान रह सकती हैं. इसी तरह कृपा दृष्टि बनी रही तो सचमुच कामवाली बाई सबसे महान बन सकती हैं. हालांकि आज भी राजा महाराजा से ठाठ-बांट और सरकारी सुविधा का लाभ

इन्हें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं. गाड़ी से आना-जाना निःशुल्क उत्तम खाना, मुफ्त में ढ़ेर सारे उपहार पाना, कभी आना तो कभी नहीं आना, नित्य नये बहाने बनाना, हाथ सफाई द्वारा पांच-दस रुपये साथ ले जाना इनका जन्म सिद्ध अधिकार हैं.

जब मैं स्कूल में पढ़ता था. कक्षा शिक्षक कुन्दनलाल कुशवाहा एवं प्रधान प्रधान पाठक हमेंशा यही कहते कि कर्म ही प्रधान हैं. जो जैसा करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा. इस महावाक्य को जितनी अच्छी तरह कामवाली बाई ने समझा उतना शायद किसी और ने समझा ही नहीं. काम को आत्म साध कर लिया. काम को ही जीवनयापन का साधन बना लिया. सिर्फ काम के कारण ही आज इन्हें घर बैठे लाने ले जाने में सैकड़ों लोग लगे हुए हैं. काम की महत्ता को भली भांति जानकर ही इन बाइयों ने घर के कामों को हाथों में लिया है. वरना राम और आम कोा छोड़कर केवल काम के पीछे क्यों भागती. रामराज्य की जगह काम काज अर्थात पंचायती राज में भी लोकलाज को त्यागकर बस गृहस्थी के काम तमाम करने में जुटी ये महिलाएं सचमुची बहुत महान हैं. काम को पूजा समझने वाली इन बाइयों की तो पूजा करनी चाहिए. भगवान भला करे इनका जिनके न तो बाल है और न ही बच्चे. बाल-बच्चे वाला भोला भाला इंसान काम वाली बाई के नखरे तो आपको सहन करने ही पड़ेगें. माधुरी की मस्ती हो या करिश्मा का कमाल, मनीषा की मर्जी हो या रवीना का रुमाल, लताजी कि आवाज हो या अमिताभ का अंदाज, जाकिर हुसैन का तबला वादन हो या बिस्मिल्ला खां साहब की शहनाई परंतु सब कुछ छोड़कर पहले कामवाली बाई की तलाश करनी पड़ती हैं. कामवाली बाई नहीं मिली तो समझों घर में कुहराम मच जाएगा. शाम को खाना भी नहीं मिलेगा. जब खाना ही नहीं तो फिर आराम करने के विषय में सोचना व्यर्थ होगा. कहने का मतलब बिना बाई के आपका जीवन नर्क बन जायेगा. कामवाली बाई ही आपका बेड़ा पार लगा सकती हैं. बाई की विशेषताओं एवं बारीकियें पर बात करें तो वर्षो बीत जाए पर बात समाप्त नहीं हो सकती. कभी गुणों का तो कभी अवगुणों का बखान करें तो महापुराण भी छोटा लगेगा. बड़े से बड़े विद्वान भी इनका गुणगान करने में अपने आपको असमर्थ महसूस करते हैं. मेरी बीबी तो इन बाईयों की बुराई कभी करती ही नहीं अपितु इनके काम की तमाम अच्छाइयों को उजागर करते हुए सदैव मुझे प्रेरित करती है कि कम से कम दो चार बाई तो घर में काम काज के लिए रखनी ही चाहिए. इससे घर में रौनक तो रहती ही है साथ ही अन्य नौकर की जरुरत भी नहीं पड़ती. बाई के बिना घर सूना, काम अधूरा और दाम पूरा देना पड़ता हैं. बड़े काम की होती है ये काम वाली बाई. इसीलिए किसी ने सच ही कहा हैः-

ना किसी से दोस्ती, न किसी से है बुराई।
सदा सभी के काम आई, ये कामवाली बाई.

इनके बारे में ज्यादा कुछ कहना मेरे वश कि बात नहीं किन्तु मुझें पूर्ण विश्वास है कि आप लोग भी ऐसा अहसास जरुर करते होंगें. अच्छी-बुरी कैसी भी कामवाली बाई मिल जाए तो हमारे पड़ोसी प्रभुदयाल के पास अवश्य पहुचाएं और बदले में मुंह मांगा ईनाम पायें.

प्रधान सम्पादक, नाजनीन, सदर बाजार, बैतूल, म.प्र.

रंगे सियारों की बस्ती

यह रंगे सियारों की बस्ती, यह रंगे सियारों की बस्ती।
मुर्दो की कीमत है ज्यादा, जिन्दो की कीमत है सस्ती।।
बाहर से जितने उजले हैं, भीतर से उतने काले हैं।
बाहर बारह से चमक रहे, अन्दर से ये काले नाले हैं।।
भारत माता है विलख रही, सूझ रही इनको मस्ती।।
यह रंगे सियारों की बस्ती...............
जो भ्रष्टनीति के क्षत्रप हैं, जहरीले एक दम तक्षक हैं
इनकी खूराक बड़ी भारी, मानवता के ये भक्षक हैं।
कुर्सी गर इनकी हिल जाए, दिख जायेगी इनकी हस्ती।
ये रंगे सियारों........
बड़े–बड़े मंचो पर चढ़, सुन्दर भाषण करते हैं
मौका पाते ही जनता पर, विष बाण की वर्षा करते हैं।
इनसे छीनों सब मिल सत्ता, खतरे में देश की है कस्ती।
ये रंगे सियारो.........
निर्पेक्ष धर्म घर कहलाते, अपना ही धर्म ये भूल गये।
पूर्वजों को अपने भूल गये, अपना ही नाम ये भूल गये।
लगता है दूजेलोक के हैं, जैसे जहाज हो ये गस्ती।
यह रंगे सियारो......
संविधान की कसमे खा, काम अनैतिक करते हैं
दिखते तो हैं आम व्यक्ति, हाथी डकार ये सकते हैं।
हाथों की मुद्रा अभय, मगर पाकेट में इनके बम दस्ती।
ये रंगे सियारों ....
जिस मालिक का खाता कुत्ता, उसके द्वार ही रहता है।
स्वामि भक्ति इनसे सीखो, मालिका का प्यारा रहता है।
कीमत स्वराष्ट्र के गौरव की, न कभी समझ लेना सस्ती।

डॉ. वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'
प्रधान संपादक, मासिक सुपर इण्डिया, परियॉवा, प्रतापगढ़, उ.प्र.

प्राथमिक शिक्षा के नाम पर फर्ज अदायगी

✍ शैलेंद्र पांडेय

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति क्या है, यह किसी से छिपी नहीं है। इन विद्यालयों की स्थिति दिन प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है। हालत यह है कि जिन विद्यालयों में प्रवेश के लिए बड़े-बड़े अधिकारियों व नेताओं की सिफारिशें आती थीं, वहां अब निम्न आय वर्ग के लोग भी अपने बच्चों को भेजना पसंद नहीं करते। सरकारी प्राथमिक विद्यालय इस समय गरीबी रेखा से नीचे वाले लोगों के बच्चों के सूचक बन गए हैं। जिन विद्यालयों के आसपास ऐसे लोगों की बस्ती है, वहां बच्चों की संख्या ठीक-ठीक है लेकिन बाकी विद्यालयों में संख्या बीस से तीसके बीच सिमटी है। हालांकि शिक्षक अपने स्कूलों में बच्चों की तादात अच्छी-खासी ही बताते हैं।
प्राथमिक विद्यालयों की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार कौन हैं? अभिभावक शिक्षकों को दोषी करार देते हैं और शिक्षक अशिकारियों को। दोनों के अपने-अपने तर्क हैं। अभिभावकों का कहना है कि शिक्षक विद्यालय में आते हैं लेकिन पढ़ाने में रूचि नहीं लेते। बच्चे क्या कर रहे हैं इससे मतलब नहीं होता। शिक्षण के प्रति शिक्षकों को रवैया देख लोग अपने बच्चों का दाखिला सरकारी विद्यालय में कराने से कतराते हैं।
दूसरी ओर शिक्षकों का कहना है कि दुर्दशा के जिम्मेदार अधिकारी और संबंधित विभाग है। अधिकारी उनकी आवश्यकताएं पूरी नहीं कर रहे। कई विद्यालयों में प्रधानाचार्य नहीं हैं। शिक्षकों की ड्यूटी तमाम अन्य सरकारी कामों में भी लगा दी जाती है, इससे भी शिक्षण कार्य में खलल पड़ता है। बात चाहे जो भी हो, लेकिन इस समय कई सरकारी प्राथमिक विद्यालय टूट चुके हैं। टूटे विद्यालयों को दूसरे नजदीक के विद्यालयों में समायोजित कर दिया गश्या है। नतीजतन, एक-एक भवन में तीन-तीन विद्यालय चल रहे हैं। ऐसा ही है नया नगर, कीडगंज का प्राथमिक विद्यालय। इसके भवन में तीन विद्यालय हैं। नया नगर का विद्यालय तो है ही, बाई का बाग का प्राथमिक विद्यालय और नई बस्ती कीडगंज का पूर्व माध्यमिक विद्यालय भी इसी भवन में चलता है। इससे शिक्षकों को भले ही परेशानी न हो लेकिन बच्चों को परेशानी होती है। बाई का बाग इस विद्यालय से करीब एक किलोमीटर दूर है। वहां से बच्चों को पैदल आना पड़ता है। मुट्ठीगंज प्राथमिक विद्यालय में गाजीगंज का प्राथमिक विद्यालय तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुट्ठीगंज, मुट्ठीगंज बालिका विद्यालय भी चलता है। यही हाल रोशनबाग के प्राथमिक विद्यालय का है। इस विद्यालय भवन में नई बस्ती प्राथमिक विद्यालय तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालय रोशन बाग चलता है। सर्वाधिक दुर्दशाग्रस्त विद्यालयों में प्राथमिक विद्यालय बलरामपुर हाउस, गाड़ीवान टोला, मिन्हाजपुर का कन्या प्राथमिक पाठशाला, प्राथमिक पाठशाला मीरापुर {नगर क्षेत्र} प्राथमिक पाठशाला नया कटरा तथा दारागंज के दोनों विद्यालयों को गिनाया जा सकता है।
प्राथमिक विद्यालय बलरामपुर हाउस दो कक्षीय नए भवन में चलता है। यहां बच्चों की संख्या दस के करीब बताई गई। विद्यालय के गेट में मवेशी बांधे जाते हैं। कंडे पाथे जाते हैं। सूअर भी अपना डेरा यहीं जमाए रहते हैं। इस विद्यालय के पुराने भवन में बाहरी लोगों ने निवास बना लिया है। इन्हीं के बच्चे इस विद्यालय में पढ़ने आते हैं।
प्राथमिक विद्यालय राजापुर {नगर क्षेत्र} यहां बच्चों की संख्या डेढ़ सौ के आसपास है। प्रध ाानाध्यापक और एक सहायक अध्यापक की नियुक्ति है। विद्यालय भवन का बुरा हाल है। मोहल्ले का सुनील यहीं पढ़ा है। स्कूल में पढ़ाई कैसी होती है? इस प्रश्न पर कहता है। कि यदि पढ़ाई ही कायदे से हुई होती तो आज विक्रम न चला रहा होता। इसी मोहल्ले का सुनील बताता है कि रात में विद्यालय भवन मजदूरों का प्लेटफार्म बन जाता हैं। लोग जुआ खेलते हैं और शराब भी यहां पीते हैं। इसी भवन में राजापुर का पूर्व माध्यमिक विद्यालय भी लगता है। इसके चपरासी राजेंद्र प्रसाद सिंह बताते हैं कि विद्यालय की चहारदीवारी तोड़कर विद्यालय की भूमि पर कब्जे का प्रयास चल रहा है। कब्जे का प्रयास करने वाले मवेशी तो बांधते ही हैं, गोबर भी विद्यालय परिसर में फेंकते हैं। पूर्व माध्यमिक विद्यालय का भवन बने करीब दो वर्ष हो गए लेकिन एक भी दिन बच्चे उसमें नहीं बैठे। जमीन पक्की नहीं है। छतें टपक रही हैं। करीब पांच वर्ष हो गए कोई अधिकारी विद्यालय की जांच के लिए के लिए नहीं आया।
परिषदीय प्राथमिक विद्यालय नया कटरा {नगर क्षेत्र} और प्राथमिक विद्यालय नया कटरा की दशा बेहद खराब है। विद्यालय भवन सूअर बाड़ा बन गया है। लोग फारिग होने के लिए भी विद्यालय परिसर का इस्तेमाल करते हैं। कन्या विद्यालय में पढ़ने वाली अरविंद पासी की बेटी मोनिका बताती हैं। हम लोगों को मास्टर जी खूब पढ़ाते हैं? बताती है, सीधी गिनती और उलटी गिनती दोनों पढ़ाते हैं। मोहल्ले के राजकुमार रावत बताते हैं कि शिक्षक आते तो हैं पर राजनीतिक बातों के अलावा कुछ नहीं करते। जब से शास्त्री जी, मौर्या जी आदि रिटायर्ड हुए पढ़ाई ही चौपट हो गई। करीब पैंतालीस वर्ष का राजकुमार बताता हैं कि उसके जमाने में इस विद्यालय की तूती बोलती थी। दूर-दूर के लोग इस विद्यालय में पढ़ने के लिए आते थे। विद्यालय के पढ़े कई छात्र इस समय बड़े अफसर हैं। विद्यालय में इस समय केवल शिक्षा के नाम पर फर्ज अदायगी होती है। पोषाहार कक्ष पर मोहल्ले के ही दबंगों का कब्जा है। अनिल चौरसिया, संजीव कुमार साहू आदि ने बताया कि जब से नए शिक्षक आए विद्यालय बरबाद हो गया।
गाड़ीवान टोला का प्राथमिक विद्यालय एकदम जर्जर हो गया है। दो भवनों के बीच में न होता तो हल्की हवा में ही भवन धराशायी हो जाता । यह विद्यालय किराए के भवन में चलता है। तीन शिक्षक करीब पंद्रह बच्चों को पढ़ाते हैं। इसी दशा को प्राथमिक कन्या पाठशाला मिन्हाजपुर भी पहुंच चुका है। एक शिक्षिका ने बताया कि यहां उन्हीं के बच्चे आते हैं जो प्रतिदिन कमाते और खाते हैं। किराए के भवन पर चलते वाला यह विद्यालय भी दुर्दशाग्रस्त है। प्राथमिक विद्यालय रोशनबाग बिना प्रध ाानाचार्य के है। कार्यवाही प्रधानाचार्य बताते हैं कि जो बच्चे आते हैं **शेष पृष्ठ २३**

जायज़ कमाई

अभिनव ओझा

धर्मपाल जब रोज की तरह घर पहुँचा तो झोपड़ी का किवाड़ खुला देखकर उसका पारा चढ़ गया. कितनी बार कह चुका था कि रात बिरात घर का दरवाजा खुला रखना मानों आफत की दावत देना है, लेकिन किसीके कान पर जूँ न रेंगती थी. ठेले को नीम तले धकेल कर उसने तबाकू 'पिच्च' के एक ओर थूका और बड़बड़ाया हुआ अंदर चला गया. उसकी बीवी कजरी खटिया पर बेसुध सी पड़ी थी. चेहरा धोती के पल्ले से ढका था जिस पर बेशुमार मक्खियाँ भिनभिना रही थीं. "कजरिया, ए कजरिया, चल उठ," उसने लगभग दहाड़ते हुए कहा. कजरी हड़बड़ा कर उठी और दोनों पैर ज़मीन पर टिकाते हुए खटियाके पाट पर बैठ गई. उनीदें स्वर में उसने कहा, "खाना तिपाई पर रक्खा है. जाओ ख लो." इसके बाद जवाब का इंतजार किए बिना वह फिर पसर गई. धर्मपाल आग बबूला हो उठा. चिल्लाते हुए उसने कहा, "खाना गया भाड़ में. पहले यह बता कि तुझे नींद के आगे अपने आस पास की भी सुध नहीं रखती? साढ़े नौ बज चुके हैं और अभी तक किवाड़ खुला पड़ा है. रजुआ कहाँ है?

कजरी ने लेटे-लेटे जम्हाई ली और अलसाई आवाज में बोली, "वहीं होगा नासपीटे कलुवा की दुकान पर. सात बजे से तीन बार बुलवा चुकी हूँ, लेकिन मरा आने का नाम ही नहीं लेता. बैठा हिसाब लगाता होगा." धर्मपाल समझा नहीं, पर खामोश रहा. कुप्पीकी रोशनी में उसकी परछाइर्द पूरे कमरे का नाप रही थ. घर के उस उकमात्र कमरे के दूसरी ओर एक छोटा सा आंगन था. धर्मपाल कमरे और आंगन के बीच की देहरी पर, थ्रोके कदमों से चलता हआ आकर खड़ा हो गया. कजरी की तरफ पीठ किए ही उसने धीरे से कहा, "आज आने दे उसे. सारा हिसाब किताब भुला दूँगा." अपनी आवाज़ उसे खुद ही खोखली लगी. वह जानता था कि हमेशा की रह राजू पी कर आएगा और बाहर बगिया में पड़ी चारपाई पर ढेर हो जाएगा. और वह-वह उसका बाप होते हुए भी बेबस सा देखता रहेगा. चा कर भी कुछ न कर पाएगा.

धर्मपाल और उसकी इकलौती औलाद राजू के बीच छत्तीस का आंकड़ा था. कमोबेश यही स्थिति नई बस्ती के अधिकांश घरों में थी. शहर की सीमा पर आबाद यह बस्ती कहीं से भी आबाद नहीं थी. फौजी छावनी से दो किलोमीटर के फासले पर बनी इस नगरीमें तकरीबन डेढ़ सौ घर थे. ज्यादातर में मेहनत मज़दूरी करके रोज़ कमाने और खाने वाले, रोज जीने और मरने वाले और रोज़ नई लड़ाई वाल`इंसान निवास करते थे. इनकी अभिलाषाएँ रात को बिछौने पर, नाली की सड़ांध कुत्तों के रूदन और ढिबरी की कांपती लौ के बीच जन्म लेतीं और सुबह बादलों कील तरह उड़ जातीं. अशिक्षा, दुर्व्यसनों और अभाव से घिरी इन जिंदगियों का न कोई आधार था, न लक्ष्य. इनका अपना एक दाश्यरा था जिसके बार आने की इन्होंने कभी कोई ज़रूरत ही नहीं समझी.

नई बस्ती में जीवन के अनेक रूप साकार दिखते थे. जहाँ कड़ी मेहनता और लगन की अग्नि से तपे कुछ खरे इंसान थे, वहीं अकर्मण्यता और नशाखोरी के मारे काहिल भी मौजूद थे. अधिकतर संख्या ठेलेवालों, मज़दूर, कुल्ली, पानवालों, भंगियों और रिक्शेवालों की थी. कुछ कारीगर भी थे जो अपनी फ़नकारी और हुनर से रोज़ी चलाते थे, जैसे पेंटर, बढ़ाई, बांसुरी बनाने वाले और मूर्तिकार. पर इनकी संख्या आटे में नमक के बराबर थीं.

म्युनिसिपैलिटी के नल पर वाक् युद्ध औरतों का निरंतर चलता घनघोर संग्राम, शराब से तर होती मोटी गालियाँ और पुलिस की मार, ये सभी उस जंजीर क कड़ियाँ थीं, जिसे नई बस्ती कहते थे. इसी बस्ती में धर्मपाल का भी एक छोटा सा संसार था.

रात के करीब साढ़े बारह बजे राजू लड़खड़ाते कदमों से घर र लौटा. झोपड़ी के बार बगिया में एक चारपाई हेशा पड़ी रहती थी. राजू उसी पर कटे पेड़ की तरह गिर पड़ा और न जाने क्या बड़बड़ाने लगा. धर्मपाल अभी तक जग रहा था. जवान बेटे के गुमराह कदम उसकी आँखों से नींद गायब करने के लिए काफ़ी थे. आखिरी कश लेकर उसने बीड़ी एक तरफ फेंकी और आंगन से उठ कर कमरे से होता हुआ बाहर, बगिया में आकर खड़ा हो गया. कमरे में कजरी अभी भी चैन से सोई थी. उसके चेहरे पर मुस्कान थी- शायद कोई सपना देख रही थी, क्योंकि चेतन अवस्था में उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आना मानों पत्थर में फूल खिलना था. एक जीवनकाल गृहाग्नि में होम करने के बाद यह अहसास कि उसकी अपनी संतान के लिए उसका अस्तित्व निरर्थक है, कजरी पर भारी गुज़रा था.

थके बोझिल कदम, जिनमें पैंतालीस साल का टूटता, जूझता इतिहास था, धीरे-धीरे चलते हुए चौबीस वर्षीय वर्तमान के सिरहाने पर आकर रूक गए. वह वर्तमान, जिसका भविष्य तो था पर न जाने कौन सा अंधकार उस पर हावी हो चुका था. राजू नींद में था, पर उसे अभी भी होश था. आँखें बंद किए वह धीरे, अस्पष्ट शब्दों में कुछ बुदबुदा रहा था.

"रजुआ, उठ बेटा." धर्मपाल ने हौले से कहा. राजू पर कोई प्रभाव नहीं हुआ. धर्मपाल ने अब दोनों हाथों से राजू के कंधे लगभग झिंझोड़ते हुए ऊँची आवाज़

में दोहराया, "राजू! उठ बेटा चल खाना खा ले."

राजू कुनमुनाया और अचकचा कर आँखें खोल दीं. नशे के लाल डोरे आँखों में चमक रहे थे. अपने बाप को पहचानने में उसे दस सेंकड लगे. फिर उसने दाएँ बाएँ इस तरह देखा और कुछ खो गया हो. अचानक वह उठ बैठा और चौंकता हुआ चिल्लाया, "जीरो खुल गया. जीरो फँस गया. जियो कल्लू जिओ. पाँच सौ का काम हो गया." कुछ देर यूँ ही बड़बड़ाने के बाद उसने धर्मपाल की ओर एक बार फिर गौर से देखा. धर्मपाल विस्मित सा राजू को निहार रहा था. कुछ पल बाद राजू एकबारगी चुप हो गया, जैसे किसी ने टेप ऑफ कर दिया हो.

धर्मपाल हतप्रभ रह गया. अभी कल ही सुबह मास्टर रमाकान्त ने उससे कहा था कि रजुवा आजकल उसी दलदल में धँस रहा है जिसकी अथाह गहराई में लाखों नौजवान स्वेच्छा से फँस कर अपना सब कुछ-पैसा, इज्जत ज़मीर और माँ बाप के अरमानों की आहुति दे रहे हैं. जो मीठा ज़हर एक दानव की तरह देश के भविष्य को निगलने को बेताब था, उसे अपनी छोटी सी दुनिया में धुलता देखकर धर्मपाल भयभीत हो उठा. वह जाहिल था. लेकिन उचित अनुचित, पाप पुण्य और अच्छे बुरे के बीच की विभाजन रेखा को साफ-साफ देख सकता था. उसने अपनी बीवी कजरी को मलिका की तरह रक्खा था. अपने बेटे के लिए उसने अपनी खुशियाँ न्यौछावर कर दी थीं. आज अपने उसी बेटे को नशे में प्रलाप करते देख उसका दिल दहल गया. तीन घंटे पहले जब वह सब्जी का ठेला लेकर घर लौटा था, तो काफी क्रोधित था. उसके गुस्से की वज़ह दिलावर खान का वो फ़िकरा था, जो उसने रास्ते में धर्मपाल पर कसा थी. बस्ती के नुक्कड़ पर ही भांग का ठेका था जो, दिलावर के कई अड्डों में से एक था. उसी के सामने से जब धर्मपाल गुज़रा तो दिलावर ने ऊँची आवाज़ में कहा, "ओ धर्मपाल. तेरा छोरा आजकल हवली में ज्यादा बैठ रहा है. जाओ जाकर मिल आओ उससे. इस समय होगा अपने यार उस्मान के साथ"

धर्मपाल सकते में आ गया था. उड़ती-उड़ती उसने भी सुनी थी कि राजू की आजकल शराब से दोस्ती उसके बचपन के यार उस्मान से, किसी भी सूरत में कम नहीं थी. उस्मान दिलावर का भतीजा था मगर उसे फूटी आँख नहीं सुहाता था दिलावर का यह व्यंग्य बाण धर्मपल के दिल को छेद गया, पर वह कुछ नहीं कह सका. बस्ती के उस हिस्ट्रीशीटर मुज़रिम और जुए के सरगना के मुँह कौन लगता? वह चुपचाप सिर झुकाए लौट आया. और अब राजू का यह रूप. धर्मपाल की समझ में नहीं आया कि उसने राजू की परवरिश में कौन सी कसर रख छोड़ी जिसका उसे आज यह सिला मिला था. पर राजू की मौजूदा हालत देखकर उसने कुछ कहना उचित नहीं समझा. चुपचाप आंगन में वापस आया और लेट गया. बाकी रात तारों की आँख मिचौली देखते कट गई. सुबह दस बजे जब धर्मपाल जागा तो राजू जा चुका था. कजरी मुँह लटकाए बैठी थी. धर्मपालने पूछा, "क्या हुआ? इस तरह गुमसुम क्यों बैठी है?" कजरी ने निराशा से सिर हिलाते हुए कहा, "पचास रूपए मिट्टी के तेल और चीनी के लिए बचा कर अलग रक्खे थे. अभी-अभी राजू लड़झगड़ कर छीन ले गया." उसके स्वर में वेदना स्पष्ट झलक रही थी. धर्मपाल आँखें मलते हुए उठा और बाल्टी से पानी निकाल कर चेहरे पर छींटें मारने लगा. एक लोटा पानी पीने और लम्बी डकार लेने के बाद उसने मुँह पोंछते हुए कहा, "अब से तुझे पैसे की कभी भी जरूरत पड़े, अपने लिए या घर के लिए तू मुझसे माँग लिया करना. आज के बाद अब सारे पैसे मेरे हाथ में रहेंगे. देखूँ मुझसे जबर्दस्ती कैसे करेगा."

एक घंटे बाद नहा धोकर धर्मपाल ने रात की रोटी चाय के साथ खाई और ठेले पर सब्जी सजाने लगी. वह जब चलने के लिए तैयार हुआ तो कजरी धीरे से बोली,"आज पन्ना की बहू दिखाई में जाना है. कुछ देते जाओ" धर्मपाल ने सदरी में हाथ डाला और कुछ नोट व रेजगारी निकाली. गिन कर इक्यावन रूपए कजरी को देते हुए उसने कहा,"पन्ना की बात है. इक्यावन से कम में काम नहीं चलेगा. ले रक्ख इसे." पन्नालाल ही धर्मपाल का एकमात्र सच्चा दोस्त था. वही उसका हमप्याला, हमनिवाला और हमदर्द था.

कजरी को पैसे देने के बाद धर्मपाल ठेला लेक आगे बढ़ा. मंडी तक वह यही सोचता रहा कि राजू अब इतना ढीठ हो गया कि उसे अपने बाप का भी डर नहीं रहा.

इधर कजरी यह सोचते हुए घर के अंदर चली गई कि चालीस रूपएका वह थोड़ा राशन और मिट्टी का तेल मंगा लेगी और ग्यारह रूपए की बहू को मुँह दिखाई में दे देगी. बाद में उसे एक अच्छी सी धोती दे आएगी. हालांकि यह सब करने को उसका जी नहीं चाहा, पर मज़बूरी जो थी.

पचास रूपए का नोट जिसमें अशोक के चक्र के आसपास कहीं कजरी के आँसू भी चमक रहे थे, को लेकर राजू सीधा कल्लू की दुकान पर जा पहुँचा. कल्लू पान खा चुका था और तर्जनी से चूना चाटने की तैयारी कर रहा था. नोट कल्लू के सामने फेंकते हुए राजू बोला, "ले यार कल्लू. जल्दी से भाग्यरेखा का सत्ता गिन दे. डिमान्डेड है." कल्लू ने लपक कर नोट उठा लिया और जेब के सुपुर्द कर **शेष पृष्ठ २३ पर......**

फिल्मों में बढ़ती अश्लीलता एवं नग्नता

आज सैंसर बोर्ड द्वारा एडल्ट फिल्मों के नाम पर एवं आम फिल्मों में भी खुले अंग प्रदर्शन एवं नग्नता को बढ़ावा दिया जा रहा हैं. आज फिल्मों को सैसर बोर्ड जिस स्तर पर पास कर रहा है उससे तो यही लगता है कि आने वाले दिनों में कोई भी फिल्म परिवार के साथ अथवा सभ्य समाज के द्वारा देखी ही नहीं जा सकेगी. इसके कुछ उदाहरण फिल्म जिस्म, मर्डर, हवस एवं जूली इत्यादि. फिल्म शक में हीरोइन द्वारा अंग प्रदर्शन एवं नग्नता का नंगा नाच खेला गया है. इसी फिल्म के एक दृश्य में टॉपलेस होकर सीन हैं. दूसरी एक फिल्म है–हैलो कौन है में नायिका ने बिकनी की जगह फूलों से ढककर शरीर का बेहयापूर्ण नंगा प्रदर्शन किया हैं. फिल्म उद्योग में धन कमाने की होड़ में अपने शरीर का बेहया पूर्ण नग्न प्रदर्शन करने वाली फिल्मों का पूँजीपति निर्माताओं की शह पर सेंसर बोर्ड द्वारा फिल्म प्रमाणीकरण नियम का खुला उल्लंघन किया जा रहा हैं. फिल्में जो समाज को एक नयी दिशा देने की माध्यम होती है, सामाजिक क्रांति लाने की द्विग्दर्शिका होती है. आज समाज में नग्नता व अश्लीलता फैलाने का काम बड़े पैमाने पर कर रही हैं. इससे हमारे आने वाली नई युवा पीढ़ी कौन सी शिक्षा लेगी इसके भगवान ही मालिक है. पिछले दिनों इलाहाबाद में जी.पी. एफ. सोसायटी के तत्वावधान में नग्नता बंद करो, अश्लीलता को हटाओं, युवा पीढ़ी को बचाओं आदि नारो से सुसज्जित बैनरो द्वारा जी. पी.एफ सोसायटी के प्रबंधक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के नेतृत्व में एक जुलूस निकाला गया और एक ज्ञापन राष्ट्रपति को सम्बोधित जिलाधिकारी को सौंपा गया.

इसी प्रकार का एक आयोजन सोफियन्ट संस्थान के सचिव सरदार पतविंदर सिंह एवं हरकिरत सिंह के नेतृत्व में किया गया. आज जरुरत है. देश के अन्य सामाजिक संस्थानों, बुद्धिजीवियों को भी इसके खिलाफ आवाज उठाने की. अगर यह आवाज एक क्रांति के रुप में पूरे देश में शीघ्र अतिशीघ्र नहीं उठाया गया तो यह आगे चलकर यह भी समाज का एक कैंसर साबित होगा.

जी.पी.एफ.सोसायटी के प्रबंधक श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा कि अगर इस पर रोक नहीं लगाई गयी तो शीघ्र ही हाईकोर्ट में एक एक जनहित याचिका जी.पी.एफ.

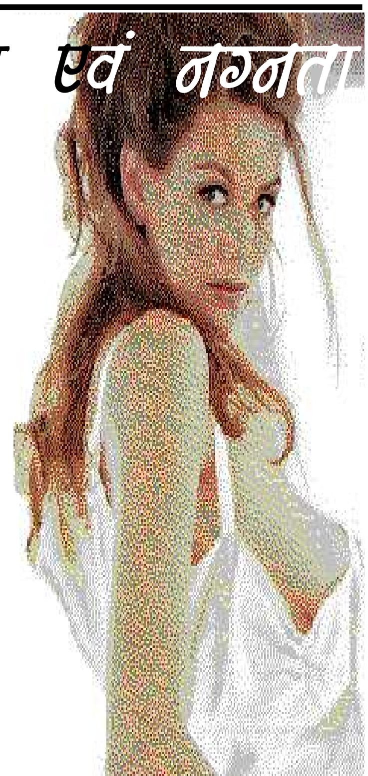

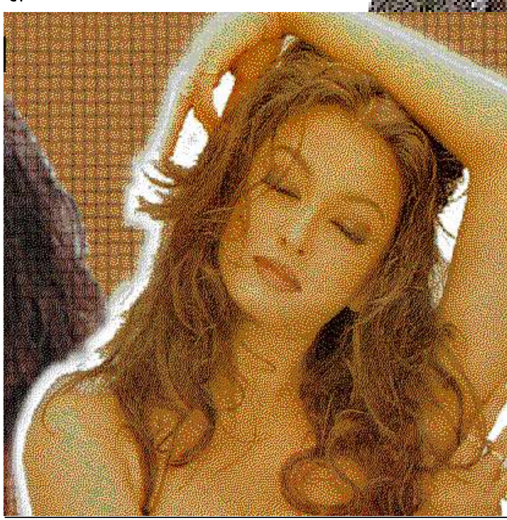

सोसायटी के द्वारा दाखिल की जायेगी. उन्होंने आगे कहा–अगर ऐसे ही फिल्मों का प्रर्दशन होना है तो सेंसर बोर्ड की क्या आवश्यकता है. इसे समाप्त कर दिया जाए.

ताकि फिल्म निर्माता प्रत्येक फिल्मों के प्रति सीधे जबावदेह हो. अभी तो सेंसर बोर्ड से प्रमाणित है, सेंसर बोर्ड ने कोई आपत्ति नही की. कहकर अपना पल्ला छाड़ लेते हैं.

जायज कमाई २१ का शेष....

काकुछ रंगीन कागज गिनने लगा. काउंटर पर ऐसे कागजों की भरमार थी. विभिन्न आकार के रंग बिरंगे कागज़, लाखों करोड़ों की हैसियत रखने वाले कागज़, इंसान का भाग्य जो आज तक इंसान मात्र अपने परिश्रम और संकल्प से संवारता आया था, को बदलने का दावा करने वाले कागज़, मुफ़लिस को ज़रदार ओर ज़रदार को फकीर बनाने वाले कागज़; सामने मेज पर नोट की गड्डियों की तरह करीने से सजे हुए थे. न जाने कितनों की तकदीरें इनमें कैद थीं. हजारों, लाखों मॉओं के अरमानों के खून और ग़म के अनगिनत ऑसुओं ने उन कागजों की चमक को कई गुना बढ़ा दिया था.

वह कागज़ जिसकी चमक से चकाचौंध होकर राजू ने आधी रात को पैंतालीस वर्षीय इतिहास के सीने पर वार किया था–लॉटरी का टिकट था.

नई बस्ती की मातृभाषा लॉटरी के आंकड़े थे. उसकी हसरत लॉटरी का ड्रॉ थी. देश, समाज और संसार की गतिविधियों में कोई रूचि न लेने वाले नई बस्ती के लोगों की रूचि लॉटरी के विषय में असाधारण थी. देश के प्रधानमंत्री और प्रदेश के मुख्यमंत्री का नाम न जानने वाले लोग इस बात को बड़ी आसानी से जान लेते थे कि आज के ड्रॉ में कौन सा नंबर खुलने की सर्वाधिक सम्भावना है. न जाने उनका सुप्त सामान्य ज्ञान कैसे जागृत हो जाता.**शेष अगले अंक में.**

सारस्वत सम्मान समारोह एवं पत्रिका प्रदर्शनी आयोजित

जनपद औरैया मुख्यालय पर औरैया हिन्दी प्रोत्साहन निधि के षष्टम सारस्वत सम्मान समारोह में कानपुर के वागीश शास्त्री एवं डॉ० प्रदीप दीक्षित, सीतापुर के डॉ० गणेशदत्त सारस्वत तथा फूलपुर के डॉ० उमाशंकर शुक्ल 'उमेश' सहित नौ साहित्यकारों/ हिन्दी सेवियों को सम्मानित किया गया.

इस साहित्यिक समारोह में विभिन्न पत्रिकाओं की जानकारी जन–जन पतक पहुँचाने, समाज में पत्रिकाओं के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने तथा श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिकाओं के पढ़ने हेतु प्रेरित करने आदि उद्देश्य से एक पत्रिका प्रर्दशनी भी लगाई गई जिसमें लगभग सवासौ पत्रिकाओं को लोगों संज्ञान में लाने हेंतु रखा गया. पत्रिकाओं का महत्व तथा प्रदर्शनी में उपलब्ध सभी पत्रिकाओ के डाक पता मुद्रित एक पुस्तिका दर्शकों को निःशुल्क वितरित की गई जिससे लोग अपनी मनोवांछित पत्रिका मंगवा सके. आयोजक का किसी पत्रिका के प्रति आग्रह रहित निरपेक्ष भाव से किया गया पत्रिक ा प्रर्दशनी में न तो किसी पत्रिका की ब्रिक्री की गई न सदस्य बनाये गये. पत्रिका प्रर्दशनी यथा अवसर विभिन्न स्थानों/महाविद्यालयों में लगाये जाने की योजना हैं. पत्रिका के प्रकाशक यदि चाहें तो अपनी पत्रिका की एक प्रति आयोजक को इस स पते पर भेज सकते हैं–कैलाश त्रिपाठी, शिव–कुटी, आर्यनगर, अजीतमल, औरैया, उ.प्र., २०६१२१

प्राथमिक शिक्षा पृष्ठ २६ का शेष. ..

वे पोषाहार छात्रवृति के लालच में। यहीं के एक शिक्षक का कहना है कि जब से प्राथमिक विद्यालय परिषद के अधीन हुए तब से इनका पतन शुरू हो गया। अब तो टाट-पट्टी भी आया कहीं से नहीं उपलब्ध हो पाती। अधिकारी भी विद्यालयों में कम ही आते हैं। इस सत्र में विद्यालय की जांच करने के अधिकारी नहीं आया। सरोजनी कालोनी के विद्यालय में भी बच्चा पढ़ने नहीं आता। प्राथमिक विद्यालय ने मलाका के परिसर में ही मोहत्सिमगंज का विद्यालय लगता है। जबकि यह मोहल्ला यहां से करीब १किलोमीटर दूर है। पूर्व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अलोपीबाग के एक शिक्षक ने कहा कि अधिकारिक उदासीनता से ही विद्यालय इस स्थिति में पहुंच गए।

बच्चे क्या कर रहे हैं इससे मतलबनहीं होता। शिक्षण के प्रति शिक्षकों का रवैया देख लोग अपने बच्चों का दाखिला सरकारी विद्यालय में कराने से कतराते हैं।

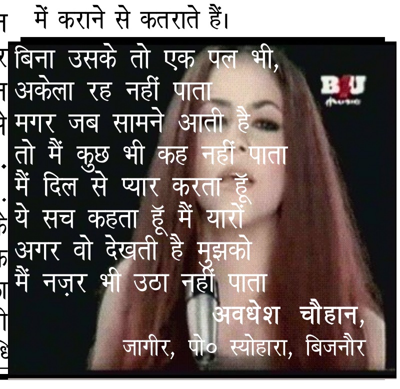

दोस्ती

रानी जायसवाल

एक गॉव में दो सहेली रहती थी. एक काम नाम सीता तथा दूसरे का नाम रीता था. वे हमेशा एक दूसरे के सुख दु:ख में काम आया करती थी. उनकी दोस्ती को देखकर गॉव वाले जलते रहते थे और एक दिन कीबात है कि सीता को किसी जरुरी काम से बाहर जाना पड़ा. इस पर गॉव वालो ने रीता से सीता के बारे में उल्टा सीधा कहकर दोनों की दोस्ती में दरार कर दिया. जब सीता लौटी तो रीता के इस व्यवहार से वह बहुत दुखी हुई. उसने कहॉ कि रीता क्या बात है तुम तो ऐसी नहीं थी.मुझसे क्या गल्ती हो गई जो तुम मुझसे इस प्रकार का व्यवहार करती हो, रीता ने कुछ नहीं कहा. सीता बोली तोड़ने की साजिश गॉव वालों की है पर तुम समझदार हो और तुम जानती हो कि दोस्ती एक विश्वास का नाम है. पर तुम किसी की बात में आकर ऐसा कर रही हो, दोस्ती का मतलब है कि एक दूसरे पर भरोसा करना. दोस्ती में ऊंच नीच, गरीब नहीं देखा जाता. सीता ने रीता को समझाया और रीता रोने लगी. वह कही सीता मुझे मॉफ कर दो मुझे गॉव वालों की बातों में नहीं आना चाहिए था. सीता खुश हो गई कि उसकी सहेली उसकी बात समझ गई और दोनों फिर से और गहरी दोस्त हो गई.

आजाद नगर दक्षिणी, बरहज, देवरिया.

विश्व मंगल

प्रभु मंगल
हो सबका, उसीमें
मेरा मंगल।
नैन में ज्योति
दो इतनी कि देखूं
विश्व मंगल!
करुणामय
कठिन शुष्क को भी
करो तरल!
महके हर
स्थल, खिले कमल
सहस्र दल!
देह पुष्कर
सब का हो पावन
ज्यों गंगाजल!
धरतीमय
हो शोभित शाद्वल
शस्य श्यामल!
सिंह व्याघ्र व
वयोवृद्ध पेड़ों से
भरे जंगल.......!

नलिनीकान्त

अंडाल, पं. बंगाल, 713321

स्नेह बाल प्रतियोगिता

प्यारे बच्चों हम आपके लिए इस बार से एक ईनामी प्रश्न प्रतियोगिता दे रहे हैं. इस प्रतियोगिता में 12 वर्ष तक की उम्र का कोई भी बालक/बालिका भाग ले सकता है. आप इन प्रश्नों के उत्तर हमें 20 दिसम्बर तक साधारण डाक से भेजें. सभी प्रश्नों के सही हल बताने वाले ढेरों ईनाम दिए जाएगें.

प्रश्न निम्न है–

प्रश्न 1. भारत के राष्ट्रपति का पूरा नाम क्या है?

प्रश्न 2. उत्तर प्रदेश के राज्यपाल का नाम बताइए?

प्रश्न 3. सचिन तेंदुलकर किस खेल से संबंधित है?

प्रश्न 4. उत्तरांचल राज्य कब बना था?

प्रश्न 5. उत्तरांचल के मुख्यमंत्री का क्या नाम हैं?

प्रश्न 6. अपने जिले के पांच दर्शनीय स्थलों के नाम लिखें?

प्रश्न 7. आप कैसे शिक्षक को पंसद करते हैं?

प्रश्न 8. सारे जहॉ से अच्छा हिदोस्ता हमारा किसने लिखा था.

प्रश्न 9. तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूगां किसने कहा था?

प्रश्न 10. लता मंगेश्कर क्या करती है?

नीचे दिये गये कूपन को साथ में अवश्य भेजें–

कूपन

प्रतियोगी का नाम:..................................

पिता का नाम :..................................

उम्र:.................... कक्षा: ....

स्कूल का नाम:..................................

पता: ....

आवश्यकता है

विगत चार वर्षो से प्रकाशित, बाजार की सबसे सस्ती राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** तथा सबकी ख़बर व सबपे नज़र रखने वाले हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'दं हंगामा इंडिया' हेतु ब्लाक, तहसील, जिला, मंडल व राज्य स्तर पर – संवाददाता, संवाद सूत्र,ब्यूरो प्रमुख, ऐजेंसी लेने के लिए इच्छुक एजेंट

हमें टिकट लगें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें : सम्पादक, विश्व स्नेह समाज एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

१. राक्षसी–वृत्ति

नित्य ही बलात्कार, फैल रहा समाचार
वासना का तॉडव नृत्य हो रहा है देश में।
नग्न दृश्य दिखा रहा, कैसा दूरदर्शन,
बदल रहा फैशन किस–किस भेष में।
अबला किशोरियों की अस्मिता है खत़रे में,
जाने कैसा विष घुल रहा परिवेश में।
राम जाने कैसे दूर होगी हैवानियत,
कैसे सुधरेगी राक्षसी–वृत्ति देश में।।

२. मृत्युभोज

जीतेजी कभी नहीं आदर किए जिनका
जन्म देने वाले मॉ–बाप को रुलाते हैं
पढ़ा लिखा बड़ा कर सर्वस्व सौंप दियां,
अहसान उनका सभी भूल जात हैं।
स्वर्गवासी होने पर उन्हीं माता–पिता की
आत्मा की शांति हेतु पाखण्ड दिखाते हैं।
कैसी है विडंबना कि मरने पर इंसान,
मृत्युभोज दे मिष्ठान खिलाते हैं.

डॉ. गौरी शंकर श्रीवास्तव, 'पथिक'
'पथिक कुटिर, जवाहर नगर, सतना, मप्र.

ग़ज़ल

जो तेरे दिल में ज़ेहन में तेरी ज़ुबान में हैं,
वही तो बर्क़ मुजस्सम मेरे बयान में हैं।
खुला न खोला गया द्वार जिसका सदियों से,
कोई तो राज़ है जो क़ैद इस मकान में है।
गिरोतो हरसू हैं इस दौर में तमाशाई,
न दस्तगीर मगर कोई अब जहान में हैं।
खुदा के बन्दो बताओं ये ख़ूने नाहक क्यूँ,
क्या इसकी गीता में ताईद या क़ुर्आन में हैं।
बला का शोर ज़मी पे है हर सू और उधर,
ग़ज़ब की एक ख़मोशी भी आसमान में हैं।
ज़ुबा से फूल तो झड़ते हैं आपकी लेकिन,
छिपा रखा है जो ख़जर हमारे ध्यान में है।
दिखाओं दिन में भी लोगों को चॉद और तारे,
विधान ऐसा भी क्या कोई संविधान में है।
भरी बहार में जलता न अपना यूँ गुलशन,
ज़रुर खोट कोई दिल–ए–बाग़वान में हैं।
मिसाले शम्स तू डूबेगा बहे ज़ुल्मत में,
ऐ शाहे वक़्त बता क्यूँ औ' किस गुमान में हैं।

भगवान दास जैन
बी.105, मंगलतीर्थ पार्क, कैनाल के पास, जशोदानगर रोड, मणीनगर, पूर्व, अहमदाबाद, गुजरात

ज्योतिष

माह दिसम्बर व जनवरी के व्रत त्योहार व साईत

पं0 शम्भू नाथ मिश्र

२:१२-पंचमी, दिन में ११.१७ तक सभी कार्यो के शुभ कार्यो के लिए उत्तम, वधू प्रवेश एवं द्विरागमन का मुहुर्त हैं.

६:१२-नवमी,दिन में ८:१३ के बाद ५:३७ तक सभी शुभकार्यो के लिए साईत हैं. वूध प्रवेश, द्विरागमन, गृहप्रवेश,. पूर्व को छोड़कर हर दिशा की यात्रा शुभ.

८:१२-एकादशी, एकादशी व्रत

९:१२-द्वादसी, प्रदोष व्रत

१०:१२- महाशिवरात्रि व्रत.

१२:१२-अमावस्या, स्नानदान आदि. पिड़िया.

१५:१२-श्री गणेश चतुर्थी व्रत. खरमास आरम्भ.

१६:१२-गुरुतेगबहादुर शहीद दिवस, प्रातः ७:१८ तक जातकर्म, नामकरण, पूर्व दक्षिण यात्रा, वधू प्रवेश

२२:१२-मोक्षदा एकादशी व्रत.

२३:१२-प्रदोष व्रत.

२५:१२-काश्या पिशाचमोचन दर्शन, क्रिसमस दिवस.

२६:१२-स्नानदान व्रत पूर्णिमा

३०:१२-संकष्टी श्री गणेश चुतर्थी व्रत

८:१-शनि प्रदोष व्रत, महाशिव रात्रि व्रत.

१३:१-श्री गणेश चतुर्थी व्रत. लोहरी पर्व

१४:१-मकर संक्रांति,

१६:१- गुरुगोविन्द सिंह जयन्ती,

२१:१-पुत्रदा एकादशी व्रत.

२३:१-नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती

२५:१-पूर्णिमा

निरन्तर अभ्यास से मनुष्य अनेक गुणों को प्राप्त कर सकता हैं. परन्तु अभ्यास से ही कुछ प्राप्त नहीं हो जाता. कुछ गुण ऐसे होते हैं, जो स्वाभाविक होते हैं. ये हैं–दानशीलता, मधुर भाषण, शूरत्व और पांडित्य–इन्हें अभ्यास से प्राप्त नहीं किया जा सकता, ये स्वभाव में होते हैं. चाणक्य नीति से

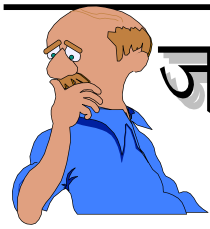

जरा हंस दो मेरे भाय

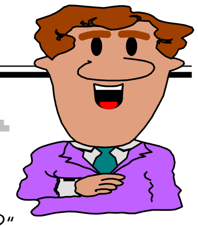

☠एक बॉस दूसरे बॉस सेः तुम्हारा कर्मचारी इतना ईमानदार है, लेकिन तुम हमेशा उसकी बुराई क्यों करते रहते हो?
बॉसः ताकि कोई उसे फुसलाकर न ले जाए.

☠ भोदूं जीः बॉस, मेरी पत्नी पूछ रही थी कि मेरा प्रमोशन कब होगा?
बॉसः मैं अपनी पत्नी से पूछ कर बताउंगा.

☠ एक पुशचिकित्सक के पास एक घोड़ेवाला पहुँचा और बोला—मेरा घोड़ा कभी ठीक चलता है और कभी लंगड़ाने लगता है. मैं क्या करुँ?
पशुचिकित्सक ने कहा, अगली बार जब वह ठीक चल रहा हो तो उसे बेच देना.

☠ अक्कड़ जी एक डॉक्टर के पास पहुँचे और कहा कि, डॉ. साहब किसी काम को करने मे मेरा मन नहीं लगता, मैं दिनभर सोता रहता हूँ. आसान से शब्दों में बताइए कि मुझे कौन—सी बीमारी है?
डॉ. ने अक्कड़ की अच्छी तरह से जांज की और कहा—तुम्हें कुछ नही हुआ है तुम आलसी हो.
अब इसी को कठिन शब्दों में बताइए ताकि मैं अपनी पत्नी को बता सकूं—अक्कड़ ने कहा.

☠ अशोक का सिर इतनी बुरी तरह कैसे फटा?
अस्पताल में नर्स ने अशोक के मित्र प्रभात से पूछा.
”उसकी कमजोर हिंदी के कारण.”
”वह कैसे?”
अशोक ने मुझसे कहा था, ”मुझे यह छड़ जमीन पर गाड़नी है. जब मैं अपना सिर हिलाऊं तब तुम उस पर खूब जोर से हथौड़ी मारना.”

☠ बच्चों के दूध की बोतल बनाने वाली कम्पनी के मालिक ने अपने सेल्समैनों से कहा, ”हमारे पास 2500 बोतलें इकट्ठी हो गई हैं, मैं यह चाहता हूँ कि आप लोग बाहर जाकर इन बोतलों की मांग पैदा करें.”

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम
स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट

THE REVISIT SHOP
Raymond
मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
फोन : 2608082

☠ ग्राहक, (दूध वाले से) ”क्या दूध बिल्कुल शुद्ध हैं?”
दूधवाला, ”एकदम शुद्ध क्योंकि इसमें मिलाए गए पानी ही हर बूंद को अच्छी तरह छाना गया हैं.”

☠ ”तुम मेरे जुड़े के लिए नकली फूल क्यों ले आए?”
”बात यह है कि तुम्हारा इंतजार करते—करते असली फूल मुरझा गऐ थे.”

☠अध्यापक, ”गाजर को सड़ने से बचाने के लिए हमें क्या करना चाहिए.”
छात्रः ”उसे खा लेना चाहिए.”

☠ टीचरः बच्चों आठ संतरों कों पांच बच्चों में कैसे बांटेगें?
सोनूः सर, जूस निकालकर.

☠ पापाः क्या तुमने अखबार वाले का बिल देखा हैं?
मुन्नाः पापा, क्या अखबार वाला भी बिल में रहता हैं?

☠अफसरः तुमने कितनी बार हवाई जहाज से छलांग लगाई हैं.
छाताधारी सैनिकः जी एक बार.
अफसरः लेकिन तुम्हारे सर्विस रिकॉर्ड में तो 20 बार लिखा हैं.
छाताधारी सैनिकः जी, शेष 19 बार तो मुझे धकेला गया था.

इस स्तम्भ में आप भी अपने पंसद के चुटकुलें भेज सकते है। अच्छे चुटकुलों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.कागज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाऍं भेजें।
2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।
3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।
4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे। हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

मोहब्बत में जब कदम लड़खड़ाए, जमाना ए समझे हम पी के आये

आप शराब क्यूॅ पीते हैं? क्या आप भी शराब पीते हैं? क्या आप शराब छोड़ना चाहते हैं? आइये जाने ज्योतिष के द्वारा कारण

✍श्री नयन शास्त्री, इन्दौर

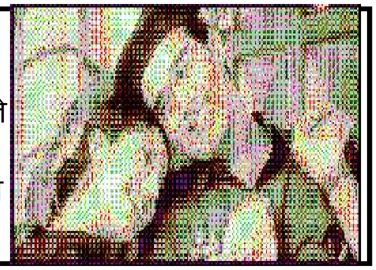

शराब पीने पर फिल्मों में बहुत सारे गाने बनाये गये. उदाहरण के लिए "मैं पीता नहीं मुझे पिलायी गयी है", "ए दुनिया वालों मुझे शराबी न समझो" अथवा एक फिल्म का गाना है–"मोहब्बत में कदम लड़खड़ाए, जमाना ए समझे हम पी के आये" या अमिताभ बच्चन की फिल्म का गाना "नशा शराब में होती तो नाचती बोतल."

आजकल शराब किसी भी महफिल की रौनक मानी जाती है, विवाह हो या कोई उत्सव, पार्टी, समारोह. बिना शराब के महफिल सुनी मानी जाती हैं. कुछ लोग ग़म भुलाने के लिए तो कुछ लोग खुशियों के समय में पीते हैं. कुछ लोग तो इसके शौकिन बन गये हैं, तो कुछ बुरी संगतो में पड़कर पीने लगे. यह सर्व विदित है कि किसी भी स्थिति में शराब के सेवन का परिणाम बुरा ही होता है. चाहे कुछ भी शराब मानव को दानव बना ही देती हैं.

मुझे तो प्रख्यात समाज सेवी, पत्रकार व कवि हृदय दाऊजी की एक कविता शराब पीने वालों के लिए आदर्श जान पड़ती हैं.

लोग ग़म में रम को पीते हैं
हम रम की बोतल में ग़म को पीते हैं यारो।
कोई जानकर पीता; कोई अनजान में है पीता,
कोई दुःख से भरे संसार में है पीता
मगर हम तो दुनिया के हंसी सैलाब में पीते है यारों

ज्योतिष मतानुसार लग्न एवं लग्नेश, चन्द्र लग्न व चन्द्रलग्नाधिपति द्वितीय भाव या द्वितीयेश पर राहु और शनि का प्रभाव हो, तो व्यक्ति शराबी होता हैं. नीचे दी हुई कुण्डली एक शराबी व सम्मानित व्यक्ति की कुण्डली हैं, जो कई वर्षो से शराब पीता चला आ रहा हैं. इस जाकत के कुण्डली में लग्न के स्वामी, द्वितीय भाव के स्वामी एवं चन्द्रमा तीनों पर राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि हैं. चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में स्वराशिस्थ सूर्य पर शनि का प्रभाव हैं. अतः इस कुण्डली के स्वामी को शराब खोरी आदत पड़ गई. इसके अतिरिक्त शराबी होने के और अन्य योग भी पाए जाते हैं जो नीचे दिया जा रहा हैं.

1. यदि जन्म लग्न में केतु स्थित हो, बारहवें भाव में अकेला चन्द्र हो लग्न अथवा लग्नेश पर क्रुर प्रभाव हो, तो जातक शराबी होता हैं.
2. यदि लग्न अथवा द्वितीय भाव में राहू या केतु के साथ नवमेश, द्वितीयेश जायेश और चतुथेश हो, तो व्यक्ति सर्वस्व लूटाकर शराब पीता हैं.
3. यदि लग्न का स्वामी शनि और राहु के साथ हो, तो शराब पीने की आदत पड़ जाती हैं.
4. सप्तम भाव का स्वामी लग्न से बारहवें भाव में हो अथवा द्वितीय भाव का स्वामी द्वादशस्थ हो, तो व्यक्ति शराबखोर होता हैं.
5. दूसरे स्थान में शनि या राहु हो, जन्म लग्न शुक्र से प्रभावित हो, तो व्यक्ति शराब का अत्यन्त शौकिन होता है. दूसरे भाव में राहु मंगल रहने से जातक कम उम्र से ही शराब का शौकिन हो जाता हैं. यदि नवम् भाव में नीच का राहु स्थित हो, द्वितीय भाव का स्वामी लग्न में हो, तो जातक शराब के पीछे दिवाना बना रहता हैं.

हर शराबी, शराब सेवन करने से पूर्व, कुछ सोचकर शराब पीता हैं, पीने के बाद त्याग देने की भावना करता है, पर छूट नहीं पाती. कितने घर शराब के पीछे बेघर हो गए. कितनी मॉ–बहनों की असमत लूटी जा रही है. मजदूर वर्ग के लोग दिन भर परिश्रम करके, खून–पसीना एक करके कमाते हैं. शाम को कौन कहे घर आनों को सीधे हौली की तरफ प्रस्थान कर जाते हैं. घर पर औरत बच्चे इन्तजार करते हैं कि पापा आयेंगे तो खाना पकेगा. पापा पके हुए आते हैं. देखकर जीव जुड़ा जाता हैं, अगर औरत बोलती है, तो लात–घूसों व गालियों की बौछार मिलती हैं.

शराब छोड़ने के उपायः शराब छोड़ने की एक ऐसी दवा बताते हैं, जिसके सेवन से बगैर किसी हिल–हुज्जत से आप शराब छोड़ देंगें. आप पॉच या छः तुलसी की पत्ती सुबह शाम चबाऍ, यह क्रिया 40 दिन, करीब सवा माह तक निरंतर करने से पुराना से शराबी शराब छोड़ देता है. इस क्रिया में लापरवाही व नागा नहीं होना चाहिए. विशेष रुप से जब शराब पीने की इच्छा करें, तो उस समय अवश्य चबाऍ.

मैं जिसका पता पाने चला,
पाया पता उसका नहीं.
जब पता उसका चला,
तब पता इसका नहीं.

"सब का मालिक एक"

घनश्याम अग्रवाल

प्राचीनकाल से वह ऐतिहासिक बस्ती का दो भागों में बंटी थी. नदी के इस पार हिन्दुओं का बाहुल्य था तो उस पार मुसलमानों का. इस पार कई पुराने मंदिर थे. मगर मस्जिद नाम मात्र एक ही थी. नदी पर एक पुल था, जिस पर दोंनों पार के लोग आया-जाया करते थे. बस्ती में शान्ति थी.
मगर एक दिन पुर मुल्क के साथ-साथ वहा भी दंगा हो गया.
अब पुल पर दोनों पार लोग नहीं, दोनों पार की खबरें, अफवाहों के साथ आने-जाने लगी और इसके साथ-साथ दंगा भी भड़कने लगा. शाम होते-होते दोनों पार की बस्तियों को दंगा अपनी चपेट में ले चुका था. इस पार मंदिरों का बहुमत था. वे उस एक अकेली मस्जिद की ओर इतनी तेजी से बढ़े, जितनी तेजी से उस पार की मस्जिदे. उस एक अकेले मंदिर की ओर बढ़ी. देखते ही देखते इस पार की मस्जिद और उस पार का मंदिर, दोनों मलबे में तब्दील हो गए. लोगों को सुखद आश्चर्य का धक्का सा लगा. जब मलबों में से सोने की अशर्फिया निकली. साथ ही यह किंवदंती भी निकली कि इस इलाके का बादशाह बड़ा नेक था. वह दोनों ध र्मो का समान रुप से प्यार करता था. और अपने हर जन्म दिन पर बस्ती के सारे मंदिरों और सारी मस्जिदों को सौ-सौं सोने की अशर्फियां दान में देता था. मंदिर और मस्जिद के मलबों में से निकली ये अशर्फिया इस बात का प्रमाण थी.
बस फिर क्या था.
उसी रात इस पार के लोगों ने अपने ही मंदिरों को और उस पार के लोगों ने अपनी ही मस्जिदों को मलबों में बदल डाला.
दिन निकलते-निकलते पूरी बस्ती मंदिरों और मस्जिदों के मलबों में सोने की अशर्फिया टटोल रही थी.
दंगा थम-सा चुका था.

अलसी, प्लांटस, अकोला-४४४००४

सेवफल

सुरेश शर्मा

मां, मुझे भी सेवफल दो ना. 'बालक की मांग.
'नहीं हैं', मॉ की मजबूरी.
'भैया को तो दिया है, देखो ना. वो खा भी रहा है.' बालक की जिद्द.
'उसकी तबियत ठीक नहीं बेटा.' डॉक्टर ने कहा है सेव खाने को.
अपनी झोपड़ी से निकलकर मजदूरी पर जाते हुए, मां ने समझाया.
सुनकर वह रो पड़ा और रोता ही रहा, जब तक कि सचमुच में, उसकी तबियत खराब नहीं हो गई.

इन्दौर, म.प्र.

ग़ज़ल

डॉ नौशाब सुहैल दतियावी

दिल को बहलाया किये, ख्वाबों की तावीर से।
यह बता दो कब मिलेगे, हम दोनों तदवीर से।।
आ भी जाओ निकलकर, दीवारों–दर से सनम।
अब तो जी नहीं भरता, तेरी ही तस्वीर से।।
मैं गुनाहगार हूँ तुम्हारा, इसलिए शायद मुझे।
बांध रक्खा आपने यूं, जुल्फो की जंजीर से।।
कट कर गिर जायेगा बाजू, तेरा इस जमीन पर।
इस तरह न लड़ियेगा, आप इस शमशीर से।।
दीवानगी का आलम न पूछिये उस राझे से।।
क्या गुजरती है उस पर पूछिये आप ही से।।
तुम पागल हो या दीवाना, क्या हो तुम 'सुहैल'
कर रहे हो बाते तुम क्यूँ वुत–ऐ–वेपीर से।।

61/13, तलैया मुहल्ला दतिया, जिला दतिया, म.प्र.

कभी प्यार तुमने निभाया भी होता
गले हंस के मुझको लगाया भी होता
कई बार रुठा हूँ मैं तुमसे लेकिन
कभी तुमने मुझकों मनाया भी होता
चेहरे पे गुस्सा ही रहता है हरपल
कभी तो सनम मुस्कुराया भी होता

राहिल फरीदी, बीसलपुर, उ.प्र.

गुफ्तगू

(ग़ज़ल विधा पर केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका)
एक प्रति : 10 रुपये वार्षिक : 40 रुपये
नमूने की प्रति के लिए 10 रुपये का डाकटिकट भेजें
सम्पादकः इम्तियाज़ अहमद ग़ाज़ी
123ए/1, हरवारा, धूमनगंज, इलाहाबाद–2110011मो. 0532–3112091

गर्भनिरोध के कुछ उपाय

यदि पति–पत्नी को आपत्ति ना हो, तो मासिक धर्म के दौरान सहवास एक सुरक्षित तरीका हैं. यदि आपका माहवारी चक्र नियमित है, तो मासिक के ग्यारहवें से अठारहवें दिन के बीच गर्भधारण की संभावना अधिक रहती हैं. अन्य दिनों में आप शारीरिक संबंध बना सकती हैं.

श्रीमती मोना द्विवेदी,
सेक्स स्पेस्लिस्ट

आज जनसंख्या नियत्रंण भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक रुकावट बना खड़ा हैं. आम आदमी की जरुरतें इतनी अधिक बढ़ गयी है कि उसे नियत्रंण करना बहुत अधिक दुष्कर कार्य हो गया हैं. आज परिवार में पति–पत्नी दोनों कार्य कर रहे हैं तब भी पैसे का अभाव देखने मिल ही जाता है. ऐसे में अगर हम अपने जनसंख्या को नियंत्रण रक्खें, थोड़ा बचकर खर्च करें तो हमें जनसंख्या नियत्रंण के साथ ही साथ अपने तनाव से मुक्ति मिल सकती हैं. यह हमारा देश के प्रति एक देशभक्ति का मिसाल होगा. प्रस्तुत हैं गर्भनिरोध के कुछ उपाय–

अगर आप विवाह के पश्चात अगर आप कुछ समय तक बच्चा नहीं चाहते, तो गर्भ नियंत्रण के उपाय अपनाएं.

दूसरा उपाय है कि बगैर योनि प्रवेश के फोर प्ले द्वारा सेक्स संतुष्टि पायी जाए, लेकिन यह सबके लिए संभव नहीं हैं.

अपनी प्रजनन क्षमता के दिनों का अनुमान लगाकर भी आप गर्भधारण से बच सकती हैं.

यदि आपका माहवारी चक्र नियमित है, तो मासिक के ग्यारहवें से अठारहवें दिन के बीच गर्भधारण की संभावना अधिक रहती हैं. अन्य दिनों में आप शारीरिक संबंध बना सकती हैं.

यह तरीका केवल माहवारी नियमित होने पर ही कारगर होता हैं.

शरीर के तापमान में हल्की सी बढ़त ऑव्यूलेशन का सूचक हैं. अतः इस विधि में शरीर के तापमान का ध्यान रखना बहुत जरुरी हैं.

यदि पति–पत्नी को आपत्ति ना हो, तो मासिक धर्म के दौरान सहवास एक सुरक्षित तरीका हैं.

यदि आपका मासिक धर्म नियमित रुप से अठाईस दिन का है, तो बीच के दस दिन की अवधि यानी नवें से उन्नीसवें दिन के बीच गर्भधारण की संभावना रहती हैं. बाकी दिन सुरक्षित होते हैं. अगर मासिक धर्म अनियमित है, तो यह तरीका ना अपनाएं.

विज्ञान की उन्नति के कारण आजकल अनेक गर्भनिरोधक उपाय मौजूद हैं, जो सस्तें, सुलभ व ज्यादा विश्वसनीय हैं. आपको क्या तरीका अपनाना हैं, इसका फैसला अपनी डॉक्टर की सलाह ले कर करें.

कंडोम गर्भनिरोधक का बहुत उत्तम व असान तरीका है. इससे गर्भधरण की संभावना छियासी से अठानवे प्रतिशत तक कम हो जाती हैं.

स्वास्थ्य समस्याएं

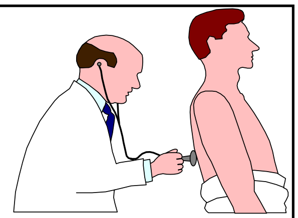

डॉ. श्रीमती पी. दूबे

प्रश्नः डॉक्टर साहब मेरे बाल में रुसी बहुत अधिक है व बाल भी झड़ते हैं. मेरे मन में नकरात्मक विचार अधिक आते रहते हैं. मैं अधिक खाता पीता भी हूॅं. लेकिन कमजोर हूॅं. इसके लिए मैं क्या करु? सौरव तिवारी, बरहज, देवरिया

उत्तरः रुसी होना आज कल आम बात है. ऑवले के पानी से नहाने से थोड़ी देर पहले बाल को धोकर थोड़ी देर छोड़ दें उसके बाद नहा ले. यह प्रक्रिया नियमित रुप से एक महीने तक दोहराएं. रुसी से छुटकारा मिल सकता हैं. वैसे अपने बालों को बाहरी व आन्तरिक प्रदूषण से बचाएं. बाल को धूल से बचाने का प्रयास करें हमेशा बाल में सरसों का तेल लगाए इससे बाल में रुसी भी नहीं रहेगी और बाल भी नहीं झड़ेगे. बाल झड़ने के अन्य कारण भी होते है जैसे गले, आंख, दांत की खराबी. शरीर में गम्भीर रोग हो जाना. आप अपने साथ प्रत्येक घटना को अच्छा समझे. जीवन में आशान्वित रहें. व्यर्थ की चिंता न करें. आप तन्दरुस्त हो जाएंगें.

प्रश्नः मेरे चेहरे पर मुंहासे बहुत ज्यादे हैं. मैं कई प्रकार की दवाएं आजमा चुकी हुॅं लेकिन कोई भी दवा कारगर नहीं होती हैं. मैं क्या करुॅं.

ममता सिंह, भोपाल

उत्तरः आज मुहांसे की समस्या अधिकतर महिलाएं परेशान हैं. मुहांसो से जहां एक ओर चेहरे का सौन्दर्य नष्ट होता है वहीं दूसरसी ओर सबसे अधिक समस्या मुहांसे युक्त त्वचा के मेकअप करने में आती हैं. बहुत सी महिलाएं तो मुहासे से तंग आकर उनको कच्चा ही नोच कर उसका मवाद निकाल देती हैं और तो और उसको पाउडर की सहायता से छुपाने का प्रयास करती हैं जो कि उचित नही. इससे चेहरे पर गड़ढे व धब्बे बन जाते हैं

मुहांसो के निकलने से चेहरे के छिद्र खुल जाते हैं और उस स्थान पर स्याह रंग की कीले पड़ जाती है जो समस्या का कारण बनती हैं. जहां तक हो सके सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग कम ही करें, चेहरे को साफ–सुथरा रक्खे. चेहरे पर चन्दन पाउडर में गुलाब जल मिलाकर प्रयोग करें लाभ मिलेगा.

मुबंई एक भिखारी की आय तीस हजार रुपये मासिक

मासिक–मुबई, देश की व्यापारिक राजधानी मुबई में किसी की चलती हो या नहीं लेकिन भिखारियों की बल्ले–बल्ले हैं. सोशल डेवलपमेंट सेंटर द्वारा कराए गए सर्वे में मुंबई में भीख मांगने को बेहद फायदेमंद धंधा करार दिया गया हैं. सर्वे में पता चला है कि मुंबई के एक लाख भिखारियों में संभाजी काले का परिवार सबसे रईस हैं. इस परिवार की मासिक आमदनी करीब तीस हजार रुपये हैं. कभी दिन मंदा रहा तो बैंक में इनके 40 हजार जमा रहते हैं. यही नहीं कुछ हजार रुपये निवेश कंपनियों में जमा हैं, विरार में दो घरों का एक फ्लैट और सोलापुर में जमीन का एक प्लाट भी हैं. ऐसे में उन्हें मंदी के दिनों में परेशानी नहीं होती है.

कनाडा की सबसे कम उम्र की सांसद

टोरटों. भारतीय मूल की रुबी धल्ला कनाडा की संसद में सबसे कम्र की महिला सांसद हैं. इस चर्चित सांसद को कनाडा सरकार के मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने की संभावना जतायी जा रही हैं.

गौरतलब है कि रुबी 10 वर्ष की उम्र से ही राजनीति में सक्रिय हैं. राजनीति के प्रति उनके रुझान से उनके माता–पिता काफी पहले अवगत हो चुके थे. मोनिटोबा में जन्मी रुबी ने तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गॉधी को पत्र लिखकर उनसे पंजाब के हालात से बेहतर तरीके से निपटने की गुजारिश की थी. प्रधानमंत्री पॉल मार्टिल रुबी धल्ला की योग्यता और क्षमता से प्रभावित हैं. खबर है कि रुबी को वे अपने मंत्रिमंडल में शामिल करने की योजना बना रहे हैं. प्रधानमंत्री की वे काफी करीबी मानी जाती हैं. पॉल मार्टिन ने ही मई में हुए चुनाव में इन्हें पार्टी की ओर से टिकट दिए जाने की सिफारिश की थी.

रुबी के एक सहयोगी एंडयू लोपेज का कहना है कि रुबी को मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने का फैसला तो पॉल मार्टिन लेगें, लेकिन हम इससे खुश है कि रुबी को मंत्री पद के लिए योग्य समझा जा रहा है.

लॉटरी में मिले 13 अरब रुपये

अरब रुपयेवाशिंगटन! कहते हैं, ईश्वर देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है. यह कहावत अमेरिका में रहने वाली एक सफाईकर्मी पर सटीक बैठती हैं. लॉटरी में 13 अरब रुपसे से भी अधिक की इनामी राशि जीतकर जेराल्डाइन विलियम्स सुर्खियों में हैं. 67 वर्षीय इस महिला को मिलें 29.4 करोड़ डॉलर (करीब 13.23 अरब रुपये) उत्तरी अमेरिका के इतिहास में किसी व्यक्ति को मिलने वाली दूसरी सबसे बड़ी रकम हैं.

नौकरी से रिटायर होने के बाद विलियम्स जीविका चलाने के लिए सफाई का काम करती है, लेकिन अब लॉटरी में भारी भरकम रकम जीतने के बाद उसे कुछ करने की जरुरत नहीं पड़ेगी. उसका कहना है कि मुझकों विश्वास ही नहीं हो रहा है कि उसने इतनी बड़ी रकम जीत ली हैं.

पालतू कुत्ते की मौत से आहत महिला ने खुदकुशी की

की–मदुरइ . तमिलनाडु के विरुधनगर जिले की एक महिला ने पालतू कुत्ते की मौत से परेशान होकर खुदकुशी कर ली. पुलिस का कहना है कि 33 वर्षीय मुरुगलक्ष्मी पालतू कुत्ते की मौत से आहत होकर खुद को आग लगा ली. बुरी तरह से झुलसी मुरुगलक्ष्मी को अस्पताल में भर्ती कराया गया. डॉक्टरों ने उसे बचाने का भरसक प्रयास किया लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली.

बारह वर्ष पहले मुरुगलक्ष्मी की शादी हुई थी. तभी उसने उस कुत्ते को खरीदा था. पड़ोसियों का कहना है कि उसे कोई संतान नहीं थी और वह पालतू कुत्ते को बेहद प्यार करती थी. पुलिस के मुताबिक बृहस्पतिवार को कुत्ते की मौत होने के बाद उसने आत्महत्या की योजना बना डाली. उसे पहले स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया. वहां उसकी हालत में कोई सुधार नहीं होने पर मदुरई के राजाजी हॉस्पिटल ले जाया गया जहॉ उसकी मौत हो गई.

ईद मुबारक के शुभअवसर पर सभी क्षेत्र वासियों हार्दिक बधाई

Smart Tailors

(Suit & Safari Specilist)

प्रो0 एम.एन.अकेला

पताः 50, कोठापार्चा, डॉट के पुल के बगल में, इलाहाबाद–3 फोनः 2413926

A+ Rated IT Institute

by All India Society for Electronics & Computer Technology

MICROTEK INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY

(Direct Admission Notice for Session 04-05)

Affiliated with Makhanlal Chaturvedi University, Bhopal Recog. By U.G.C. & A.I.U

3 Years Full Time Regular Degree Programme

BCA

Bachelor of Comptuer Application
Eligibiliy: 10+2 With any discipline
Fee Structure: Rs. 10,000/- per semester

BSc(IT)

Bachelor of Information Technology
Eligibiliy: 10+2 With Mathmatics
Fee Structure: Rs. 8,000/- per semester

PGDCA

Post Graduate Diploma in Computer Application
Eligibiliy: Graduation in any disciplineFee : Rs. 7,000/- per semester

MICROTEK

NIRMAL COMPLEX, MALDAHIYA, VARANASI Tel: 0542-2207001, 2207002,
Fax : 0542-2208248

Separate Hostel Facility for Boys and Girls

आइये हम प्यार बॉटने की कला सींखे

चलिए हम इस पन्ने पर एक बच्चे की नयी जिन्दगी/एक असहाय की सेवा के नाम लिखें–

जी, हॉ, आप किसी की उजड़ी जिन्दगी में फर्क ला सकते हैं और वो भी मात्र एक रुपये में

मैं एक बच्चे की पढ़ाई के लिए/असहाय की सेवा के लिए/विधवा के लिए/ बृद्ध के लिए रु0 30/–प्रति माह (रु0 360/–वार्षिक) दे रहा हुॅं. मैं जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट/चेक (कृपया बाहर चेक पर अधिभार शामिल कर लेवें) भेज रहा हुॅं.

नाम : ....

पिता का नामः ....व्यवसायः................................

पताः..

मैं एक बच्चे की पढ़ाई/असहाय की सेवा/विधवा/बृद्ध के लिए रुपये ....(शब्दों में).. मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट/चेक (कृपया बाहर चेक पर अधिभार शामिल कर लेवें) भेज रहा हुॅं.

हमारा पताः
प्रबंधक, जी.पी.एफ. सोसायटी,
एल.आई.जी–93, नीम सराय
कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–11

दिपावली, ईद व छठ की सभी पाठकों को हार्दिक बधाई

राजा हो रंक, सबकी पसंद

राजरानी® चाय

वाह क्या चाय हैं,
वाह क्या स्वाद है

1रुपये, दो रुपये 50ग्राम, 100ग्राम, 250ग्राम, 500ग्राम व 1 किलोग्राम के पैक में उपलब्ध

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला, राजरानी

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,कानपुर